

મહાલેખાકાર (લેખા એવં હકદારી),
રાજકોટ કાર્યાલય એવં અહમદાબાદ, શાખા કાર્યાલય - ગુજરાત

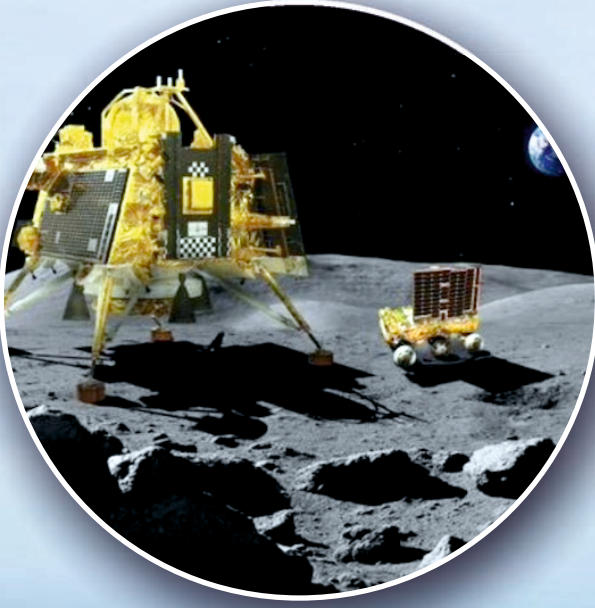


ઑંક - ૩૭

તિરંગા



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
લોકહિતાર્થ સત્યનિષ્ઠા
Dedicated to Truth in Public Interest





गिरनार परिवार

प्रकाशन

“गिरनार”

कार्यालयीन हिंदी गृह-पत्रिका

प्रकाशक

महालेखाकार

(लेखा एवं हकदारी),
राजकोट का कार्यालय एवं
अहमदाबाद शाखा कार्यालय,
गुजरात

अंक - 37
गिरनार
2023-24

मूल्य

राजभाषा हिंदी के
प्रति निष्ठा व समर्पण

मुद्रक

अक्षर ग्राफिक - राजकोट

मुख्य संरक्षक



श्री आर. के. सोलंकी

महालेखाकार

संरक्षक



श्री संतोष वी. खेडकर

वरिष्ठ

उप महालेखाकार



सुश्री

वी. एम. बालिगा

उप महालेखाकार

प्रकाशन सलाहकार समिति



श्री सुनील जे. पारेख

वरिष्ठ लेखा अधिकारी



सुश्री

आशा मधु नायर

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक मंडल



सुश्री स्वाति कुमार

हिंदी अधिकारी



श्री जसपालसिंह भण्डारी

सहायक

लेखा अधिकारी



श्री बिजेन्द्र कुमार बेरवाल

वरिष्ठ

हिंदी अनुवादक



श्री सुखदेव गोयल

कनिष्ठ

हिंदी अनुवादक



श्री सोमदत्त यादव

कनिष्ठ

हिंदी अनुवादक



सुश्री निरमा कुमारी गुप्ता

कनिष्ठ

हिंदी अनुवादक

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय	प्रकार	रचनाकार	पृ. सं.
1.	भारत के विकास में सीएजी की भूमिका	(लेख)	सुश्री जीजा कुरूप	8
2.	प्राकृतिक संसाधन लेखांकन	(लेख)	सुश्री अनी जीजो	10
3.	आज खाने में क्या बनाऊँ ?	(लेख)	श्री संदीप आर. धुरंधर	14
4.	ईश्वर का अस्तित्व-2	(लेख)	श्री हुसैनी सादिकोट	16
5.	मेघालय	(यात्रा वृत्तांत)	श्री राहुल धायल	19
6.	अगस्त्य की सूझ बूझ	(लेख)	श्री मुकेश कुमार शर्मा	23
7.	शिक्षा का बदलता स्वरूप	(लेख)	श्री सतीश कुमार	26
8.	हिमालय की गोद में	(लेख)	श्री मनीष शर्मा	28
9.	गौ आधारित खेती	(लेख)	श्री राकेश कुमार	30
10.	भारत विश्व का मार्गदर्शक	(लेख)	श्री सुमित झा	33
11.	कार्यालय यात्रा	(लेख)	सुश्री राजश्री के शाह	35
12.	जिंदगी	(लेख)	श्री राहुल कुमार	37
13.	आइए जिंदगी को सार्थक बनाए	(लेख)	श्री योगेश पटेल	39
14.	शब्दों का ताना-बाना	(लेख)	सुश्री स्वाति कुमार	40
15.	किस्मत अपनी-अपनी	(लेख)	श्री बिजेंद्र कुमार बेरवाल	43
16.	मनोवैज्ञानिक प्रबंधन	(लेख)	श्री सुखदेव गोयल	47
17.	आवश्यकता एवं आविष्कार	(लेख)	श्री सोमदत्त यादव	49
18.	मानव मूल्य	(लेख)	सुश्री निरमा कु. गुप्ता	51
19.	जिंदगी	(कविता)	श्री वैभव मित्तल	52
20.	हिन्दी और हिन्दी	(कविता)	सुश्री रंकी गुप्ता	53
21.	ऐसा एक अंतरिक्ष बनाएं	(कविता)	श्री अभिषेक पंडया	54
22.	दोस्ती	(कविता)	सुश्री प्रिसिल्ला ऐंटो	54
23.	लापरवाही	(कविता)	श्री मुन्ना कुमार	55
24.	हौंसला	(कविता)	श्री दीपक परमार	56

महालेखाकार का संदेश



“मुझे कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका '**गिरनार**' के सैंतीसवें अंक का विमोचन करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। हमारा संवैधानिक कर्तव्य है कि हम राजभाषा हिंदी का उपयोग एवं प्रचार-प्रसार करते रहें और मेरे लिए यह अत्यंत गौरव का विषय है कि सरकारी कामकाज में राजभाषा की प्रगति के लिए यह पत्रिका महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

मुझे अपने कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के परिश्रम पर गर्व है कि उनके सहयोग से हम राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति की ओर बढ़ते जा रहे हैं। मुझे आशा है कि हम कार्यालयीन कार्य में हिंदी का उपयोग करते हुए राजभाषा विभाग के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्नशील रहेंगे।

गिरनार परिवार के अन्य सदस्यगण एवं उन रचनाकारों की सृजनात्मकता एवं अभिव्यक्ति प्रतिभा के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।”

वरिष्ठ उप महालेखाकार का संदेश



“कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका 'गिरनार' के सैंतीसवें अंक के सफल प्रकाशन से मुझे अति प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। मैं, कार्यालय के उन सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने 'गिरनार' के प्रकाशन हेतु अमूल्य योगदान व सहयोग दिया है और साथ ही उन रचनाकारों को भी विशेष बधाई जो प्रख्यात लेखक, कवि, कहानीकार न होते हुए भी इस कार्यालय के अनमोल रचनाकार के रूप में अपने अमूल्य विचारों को कागज़ पर उतारकर पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु रचनाएँ प्रदान की हैं।

पत्रिका के माध्यम से यही संदेश देना चाहूँगा कि राजभाषा हिंदी सीखें, सिखाएँ और दैनिक कार्यालयीन कार्य में हिंदी का उपयोग करें। जितना हो सके टिप्पणी, प्रारूपण आदि तथा रजिस्ट्रों में प्रविष्टियाँ हिंदी में ही लिखें और अधिक से अधिक हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं का लाभ भी उठाएँ।

आशा है यह पत्रिका सभी कार्मिकों एवं पाठकगण में हिंदी के प्रति रुचि जागृत करेगी एवं हिंदी को बढ़ावा देने तथा लोकप्रिय बनाने में सक्षम होगी।”

उप महालेखाकार का संदेश



इस कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'गिरनार' के 37वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

जैसा की सर्वविदित है की राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता हेतु एक सर्वव्यापी भाषा की आवश्यकता होती है। राजभाषा हिंदी को सम्पूर्ण देश में कार्यालयी भाषा के तौर पर संवैधानिक दर्जा मिला है।

कार्यालयीन पत्रिकाएँ कार्मिकों के विचारों, भावनाओं और अभिव्यक्ति का दर्पण होती है। इन पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएँ कार्मिकों की राजभाषा के प्रति निष्ठा का प्रमाण है।

हमारे कार्यालय के कार्मिक शासकीय कार्य में हिंदी का प्रयोग कर हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान कर रहे हैं। राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी गृह-पत्रिका "गिरनार" का यह अंक एक सराहनीय प्रयास है।

मैं, पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को बधाई देती हूँ और पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएँ देती हूँ।

जय हिंद ।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी का संदेश



हिंदी भाषा 'राजभाषा' ही नहीं, भारत की 'संपर्क भाषा' भी है। यह संपर्क भाषा इसलिए बनी क्योंकि इसमें सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करके चलने की क्षमता है, जिससे प्रत्येक भारतीय आसानी और सरलता से समझ सकते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो, हिंदी बोली वाले क्षेत्र ही हिंदी भाषा के जन्मदाता नहीं है अपितु हिंदी भाषा का जन्म संपूर्ण भारत वर्ष ही है अर्थात् सभी भारतीय भाषाएँ इसमें सम्मिलित हैं। जिस कारण से हिंदी भाषा का संबंध समग्र भारतवर्ष को जोड़ने के लिए ही संचालित किया गया है। और यही कारण है कि गैर-हिंदी भाषी राज्यों में भी 'हिंदी' अधिक लोकप्रिय है और जनता इसे अपनाती है।

वैसे तो 'संस्कृत' हिंदी भाषा की जननी मानी जाती है, क्योंकि इसमें अधिकतर संस्कृत के तत्सम एवं तद्भव शब्द से लिए और बनाए गए हैं। ऐसे ही हिंदी भाषी क्षेत्र के राज्यों की विभिन्न बोलियों जैसे भोजपुरी, मगधी, कौरवी, ब्रज, मैथली, माघधी, राजस्थानी, हरियाणवी, बांगरू, इत्यादि से भी शब्द लिए गए हैं। उसी प्रकार गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों की भाषा जैसे असमिया, बंगाली, मराठी, तमिल, कन्नड़, तेलुगू, गुजराती, कश्मीरी आदि से भी शब्दों को ग्रहण किया गया है। आम बोल-चाल की भाषा में कुछ देशी शब्द भी प्रयुक्त किए गए हैं जैसे- चिड़िया, कटोरा, जूता, खिचड़ी, पगड़ी, लोटा आदि। और कई शब्द विदेशी भाषाओं (अरबी, फारसी, तुर्की, चीनी, पुर्तगाली, अंग्रेजी) से भी लिए गए हैं जैसे- कंप्यूटर, डॉक्टर, हॉस्पिटल, आराम, खूबसूरत, दुकान, औरत, किताब, चाकू, चाय, मालिक इत्यादि। इन शब्दों के हिंदी रूपांतरण होने पर भी आम भाषा में ये शब्द अधिक प्रचलित हैं, इसीलिए इन्हें जैसे-के-तैसे प्रयोग में लिया जाता है।

उक्त बातें यहाँ इसीलिए कही गई हैं क्योंकि वैश्विक स्तर पर वही भाषा टिक सकती है जिसका शब्द भंडार या शब्दकोश बड़ा और व्यापक हो। उस भाषा में उदारता भी होनी चाहिए ताकि वह अपने शब्द भंडार को निरंतर बढ़ाती जाए। हिंदी भाषा अपने विदेशी शासकीय भाषाओं से प्रभावित होकर अपने शब्द भंडार को अत्यधिक समृद्ध और संपन्न बना रही है। आज हिंदी बोलचाल के स्तर से ऊपर उठकर मानक रूप में भी ग्रहित हो चुकी है।

आशा है यह पत्रिका हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में सहायक सिद्ध होगी।

जय हिंद।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी का संदेश



सुश्री आशा मधु नायर

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है की कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका **“गिरनार”** के 37वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है |

राजभाषा हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता, धार्मिक सहिष्णुता एवं आमजन की भाषा है | यह अत्यंत सरल, सहज और सुबोध भाषा है जिसे जन साधारण द्वारा आसानी से लिखा, पढ़ा और बोला जा सकता है | राजभाषा के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार पर ही हमारा साहित्यिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय विकास निर्भर है | राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना हमारा नैतिक एवं संवैधानिक उत्तरदायित्व भी है की हम राजभाषा हिंदी के निरंतर विकास में सहभागी बनें |

कार्यालयीन पत्रिकाएँ न केवल हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में सहायक होती है अपितु कार्यालय के कार्मिकों को अपनी लेखन क्षमता और शैली को निखारने में भी बहुत सहायक होती है | पत्रिका के इस अंक को समृद्ध करने में कार्यालय के कार्मिकों ने अपनी अद्भुत लेखन क्षमता और रचना कौशल का परिचय दिया है | रचनाकारों ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों और आयामों पर आधारित अत्यंत रूचिकर, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक रचनाएँ प्रेषित कर इस अंक को प्रभावशाली बनाने में सहयोग दिया है | उम्मीद है की गृह पत्रिका का यह अंक पाठकों की ज्ञानपिपासा को तृप्त करेगा |

पत्रिका का सफल प्रकाशन हिंदी के प्रति कार्यालय के कार्मिकों की जागरूकता और समर्पण की भावना का ही प्रतिफल है |

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को बधाई |

जय हिन्द।

भारत के विकास में नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की भूमिका



सुश्री गीता कुरुप
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

क्या नीतियाँ सबसे गरीब और सबसे कमजोर की मदद करती हैं ? यदि हाँ, तो हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के शब्दों में यही सुशासन है। सुशासन की सबसे महत्वपूर्ण एवं मुख्य विशेषता जवाबदेही, पारदर्शिता एवं आम सहमती पर केन्द्रित है। यह आश्वासन देता है कि भ्रष्टाचार को कम किया जाए, अल्पसंख्यकों के विचारों को ध्यान में रखा जाए और निर्णय लेने में समाज के सबसे कमजोर लोगों की आवाज सुनी जाए। इसे समाज की वर्तमान और भविष्य की जरूरतों के प्रति भी उत्तरदायी होना चाहिए। यहाँ भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) की भूमिका का वर्णन है जो आंतरिक रूप से देश के शासन से जुड़ा हुआ है। सर्वोच्च लेखापरीक्षा प्राधिकरण के रूप में इसकी भूमिका आंतरिक रूप से सरकारी नीतियों और उपक्रमों की प्रभावकारिता को बढ़ाने से जुड़ी हुई है। जिसका अर्थ है कि भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक एवं सुशासन का रिश्ता निर्विवाद है।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक पूरे देश में भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभागों के माध्यम से सरकार और अन्य सार्वजनिक प्राधिकरणों की संसद एवं राज्य विधानसभाओं और उनके माध्यम से लोगों के प्रति जवाबदेही सुनिश्चित करते हैं। राज्य के खातों की रिपोर्ट राज्य के राज्यपाल को सौंपी जाएगी, जो उन्हें राज्य के विधानमंडल के समक्ष रखवाएंगे और संघ के खातों को राष्ट्रपति को प्रस्तुत किया जाएगा, जो उन्हें संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवायेंगे। सीएजी न केवल समेकित निधि, आकस्मिक निधि और सार्वजनिक खाते से बल्कि केंद्र और राज्य सरकार के किसी भी विभाग द्वारा रखे गए सभी व्यापार और विनिर्माण, लाभ और हानि खातों से संबंधित सभी व्यय से संबंधित लेखाओं की लेखापरीक्षा (ऑडिट) करते हैं, साथ ही केंद्र और राज्य राजस्व से पर्याप्त रूप से वित्तपोषित सभी निकायों और प्राधिकरणों, सरकारी कंपनियाँ, निगम और निकाय की भी लेखापरीक्षा करते हैं। अंत में सीएजी राष्ट्रपति और राज्यपाल के अनुरोध पर किसी अन्य प्राधिकरण के लेखाओं की लेखापरीक्षा करते हैं।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट केंद्र और राज्य की लोक लेखा समिति को सौंपी जाती है। वह समिति के कार्यों को गवाहों के सामने स्पष्ट करने और सरकार की कार्रवाई को समिति के सामने स्पष्ट करने में भी मदद करते हैं। यह देखना भी सीएजी की जिम्मेदारी है कि उसके द्वारा सुझाये गए सुधारात्मक कदम उठाये गए या नहीं। यदि नहीं, तो वह मामले की रिपोर्ट लोक लेखा समिति को देगा जो इस मामले पर विचार करेगी। दूसरे शब्दों में, सीएजी संसद की लोक लेखा समिति के मार्गदर्शक, मित्र और दार्शनिक के रूप में कार्य करते हैं।

सरकारी लेखापरीक्षा संसदीय वित्तीय नियंत्रण की योजना में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और यह सुनिश्चित करती है कि कार्यकारी निकाय आवंटित राशि के भीतर और अधिकृत उद्देश्य के लिए व्यय और बजट आवंटन रखे। यह अत्यंत आवश्यक है कि कोई स्वतंत्र व्यक्ति सरकारी खर्चों की जाँच करे और यह जाँच करे कि क्या यह संसदीय प्रतिबंधों के अनुरूप है।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक संविधान या अन्य कानून का उल्लंघन करने वाले किसी भी व्यय को अस्वीकार कर सकते हैं और इस प्रकार वित्तीय प्रशासन के क्षेत्र में संविधान और कानूनों को बरकरार रख सकते हैं। वे अधिकारियों द्वारा विवेक के किसी भी अनुचित प्रयोग को चुनौती देने और मंजूरी और व्यय के औचित्य पर टिप्पणी करने के लिए बाध्य हैं। निम्नलिखित कई क्षेत्रों के संदर्भ में कुछ मामले हैं, जहाँ सीएजी द्वारा सकारात्मक कार्रवाई की गई है और परिणाम सामने आए हैं।

1. कोलगेट और 2 जी घोटाला (मंत्रिस्तरीय गड़बड़ियों की पैरवी)

कोयला ब्लॉकों के आवंटन पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट में अनुमान लगाया है कि 2004 और 2009 के बीच कोयला खदानों के आवंटन में प्रतिस्पर्धी बोली शुरू करने में सरकार की विफलता के कारण सरकारी खजाने को 1.86 लाख करोड़ रुपये का राष्ट्रीय नुकसान हुआ। पिछले दूरसंचार मंत्री को पिछले साल केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफा देने के लिए मजबूर होना पड़ा था क्योंकि सीएजी की रिपोर्ट में उन्हें उन कंपनियों को फायदा पहुँचाने के लिये स्पेक्ट्रम का कम मूल्यांकन करने का दोषी ठहराया था जो 2 जी स्पेक्ट्रम के लिए काफी हद तक अयोग्य थी। परिणामस्वरूप सरकार को 1.76 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ।

2. राष्ट्रमंडल खेल 2010

कॉमनवेल्थ गेम्स २०१० पर अपनी रिपोर्ट में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ने बुनियादी ढांचे के विकास पर प्रतिबंध लगाते हुए राष्ट्रमंडल खेल स्थलों और गांवों के निर्माण और विकास, दिल्ली में बुनियादी ढांचे के विकास और सौंदर्यीकरण और प्रसारण अधिकारों जैसी विभिन्न परियोजनाओं के लिए ठेके देने में अनियमितताएं, पक्षपात और पूर्वाग्रह पाया। कैग ने प्राधिकरण और जवाबदेही का एक भी बिंदु स्थापित नहीं करने और स्पष्ट शासन संरचना की कमी के लिए भी सरकार को दोषी ठहराया।

3. दिल्ली मेट्रो रेल परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) ने पाया कि दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन ने 32 लाख वर्ग मीटर जमीन का अधिग्रहण किया था, लेकिन इसका कितना उपयोग किया जाएगा, इसके बारे में कोई स्थान-वार डेटा नहीं है। कई जगहों पर मेट्रो ने जरूरत से 14-35 फीसदी ज्यादा जमीन अधिग्रहीत की थी। सीएजी का बताया कि व्यवसाय जैसी कार्यप्रणाली के आधार पर इसे उचित नहीं ठहराया जा सकता।

मानव विकास कारकों की वृद्धि के बिना आर्थिक विकास निरर्थक है। बुनियादी ढांचे का विकास आर्थिक विकास का एक अवसर है, हालांकि, ज्यादातर मामलों में यह गबन को बढ़ावा देता है। यहां सीएजी का महत्व है जो इस बात पर बारीकी से नजर रखता है कि सरकार के प्रत्येक सामाजिक विकास कार्यक्रमों का लाभ लोगों तक पहुंचे और हम भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग के कर्मचारी इसे पूरा करने के लिए बाध्य हैं।



प्राकृतिक संसाधन लेखांकन (NRA)



सुश्री ऐनी जीगो
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

प्राकृतिक संसाधन लेखांकन एक नई शब्दावली है क्योंकि इसका उपयोग भारत में बहुत ही असामान्य रूप से किया जाता है। प्राकृतिक संसाधन लेखांकन एक लेखांकन ढांचे के भीतर प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित डेटा का संकलन है। प्राकृतिक संसाधन लेखांकन (NRA) की अवधारणा को भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के तत्वाधान में सरकारी लेखा मानक सलाहकार बोर्ड (GASAB) द्वारा जुलाई 2020 में 'भारत में प्राकृतिक संसाधन लेखांकन पर अवधारणा पत्र' जारी करने के साथ पेश किया गया था।

प्राकृतिक संसाधन लेखांकन (NRA) की आवश्यकता - संयुक्त राष्ट्र सभा (यूएन)

प्राकृतिक लेखांकन की आवश्यकता ने अपना पहला कदम 1970 में मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में उठाया जब इस सम्मेलन में आर्थिक विकास और वातावरण संबंधी मान भंग के बीच संबंध पर चर्चा की गई।

ब्रंटलैंड आयोग ने 1987 में पहली बार पर्यावरण और आर्थिक गतिविधियों के बीच घनिष्ठ संबंध के विचार को व्यक्त किया, जिसके बाद 1992 में पर्यावरण लेखांकन और रियो डी जनेरियो में वैश्विक शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया।

इन विकासों के साथ-साथ, संयुक्त राष्ट्र ने 1993 में राष्ट्रीय लेखा संकलन के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानक जारी किए जिन्हें २००९ में संशोधित किया गया। इसके साथ ही, संयुक्त राष्ट्र ने 2012 में पर्यावरण और आर्थिक लेखांकन प्रणाली - केंद्रीय रूपरेखा को भी अपनाया।

प्राकृतिक संसाधन लेखांकन (NRA) में सरकारी लेखा मानक सलाहकार बोर्ड की भूमिका

सरकारी लेखा मानक सलाहकार बोर्ड (GASAB) की स्थापना भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) द्वारा भारत सरकार के सहयोग से अगस्त 2002 में की गई है। GASAB केंद्रीय और राज्य सरकारों का एक प्रतिनिधि निकाय है, जिसका उत्तरदायित्व सरकारी लेखांकन और वित्तीय रिपोर्टिंग के मानकों को तैयार, प्रस्तावित और सुधार करना है। GASAB की भूमिका इस बात को प्रधानता देना है कि सम्पूर्ण रूप से प्राकृतिक संसाधनों के अच्छे और सार्थक प्रशासन के लिए पर्यावरणीय लेखांकन प्राथमिक बुनियादी आधार है।

प्राकृतिक संसाधन लेखांकन, भारत को सतत विकास लक्ष्य (एस.डी.जी.) 2030 प्राप्त करने के लिए तैयार करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित डेटा संकलित करने के लिए एक लेखांकन ढांचा है।

हालाँकि, भारत को समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों का आशीर्वाद प्राप्त है, लेकिन प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग पर शोध करने के बाद यह पाया गया है कि संसाधन हर दिन कम हो रहे हैं, जो बहुत चिंता का विषय है। इस प्रकार प्राकृतिक संसाधन लेखांकन (NRA) की शुरुआत समय की मांग है। GASAB संप्रदाय ने वर्ष 2020-21 के लिए भारत के सभी राज्यों और दो केंद्र शासित प्रदेशों में खनिज और ऊर्जा संसाधनों पर संपत्ति खाते की तैयारी शुरू कर दी है।

गुजरात में प्राकृतिक संसाधन लेखांकन (NRA) कक्ष

वरिष्ठ लेखा अधिकारी के रूप में जुलाई 2020 से प्राकृतिक संसाधन लेखांकन कक्ष का प्रभार संभालते हुए इस परियोजना का हिस्सा बनना सम्मान की बात थी। इस यात्रा के दौरान, प्राकृतिक संसाधन लेखांकन (NRA) की अवधारणा को सीखना मेरे लिए खुशी की बात थी, जो भारत में प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए लक्ष्यों और चुनौतियों की पहचान करने और सौहार्दपूर्ण रणनीतियों/तरीकों की सिफारिश करने के लिए समन्वय बढ़ाने और सरकारों की सहायता करने की दिशा में एक मुख्य कदम है। भारत में प्राकृतिक संसाधन लेखांकन (NRA) की शुरुआत हमारे देश की भावी पीढ़ियों के कल्याण के लिए एक वरदान होगी।

GASAB के मार्गदर्शन से, गुजरात राज्य में NRA का कार्य का शुभारंभ

गुजरात राज्य के लिए प्राकृतिक संसाधन लेखा सेल का गठन अक्टूबर 2020 में भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग और राज्य सरकार के विभागों के प्रतिनिधियों के साथ किया गया था। गुजरात राज्य CAG कार्यालय द्वारा चयनित सलाहकार समिति के पांच सदस्यों में से एक है।

संपत्ति खातों की तैयारी में चुनौतियाँ - 2020-21

चूँकि प्राकृतिक संसाधन लेखांकन (NRA) सिद्धान्त पहली बार प्रयोग की गई थी, इसलिए इस सिद्धान्त को समझना और राज्य सरकार के विभागों को काम को आगे बढ़ाने के लिए लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्यालयों के साथ सहयोग करने के लिए मनाना बहुत कठिन था।

इसके अलावा, खनिज संसाधनों पर विवरण/जानकारी राज्य सरकार के कार्यालयों में आसानी से उपलब्ध नहीं थी और निर्धारित समय सीमा में आवश्यक विवरण प्रदान करने के लिए राज्य सरकार को प्रभावित करना बहुत बड़ा काम था।

गुजरात राज्य के लिए संपत्ति लेखा 2020-21 की तैयारी

GASAB द्वारा निर्धारित टेम्पलेट्स में वर्ष 2020-21 के लिए राज्य सरकार के कार्यालयों से प्राप्त इनपुट के आधार पर, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक) के कार्यालय ने भूविज्ञान और खनन आयुक्त, गुजरात और पेट्रोलियम निदेशालय, गुजरात, गांधीनगर के कार्यालय की खनिज और ऊर्जा संसाधनों पर संपत्ति लेखा तैयार करने में सहायता की।

41 खनिजों में से 18 खनिजों को गुजरात राज्य के संपत्ति खाते 2020-21 में शामिल किया गया है।

आईबीएम, गांधीनगर के क्षेत्रीय कार्यालय सहित राज्य सरकारों के साथ सार्थक समन्वय विकसित करने के लिए प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक) कार्यालय, गुजरात द्वारा सभी हितधारकों के साथ बैठकों/कार्यशालाओं/संचार के माध्यम से संयुक्त रूप से ठोस प्रयास किए गए। लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग/राज्य सरकार के अधिकारियों के बीच नियमित आधार पर भौतिक और आभासी बैठकें लेखा एवं हक कार्यालय द्वारा पावर-पॉइंट प्रेजेंटेशन और GASAB सेक्टराइट से मार्गदर्शन प्राप्त करके आयोजित की गई। लेखा एवं हक और लेखापरीक्षक कार्यालय दोनों ने संयुक्त रूप से उपरोक्त परिसंपत्ति खाते तैयार करने की पद्धति तैयार की हैं।

GASAB में गुजरात राज्य का प्रतिनिधित्व :

गुजरात राज्य को, 3 जून, 2022 को भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय में भारत के उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, जो कि GASAB के अध्यक्ष हैं, के साथ आयोजित दूसरी परामर्शदात्री बैठक के लिए पाँच राज्यों में से चुना गया था।

भूविज्ञान और खनन आयुक्त ने सीजीएम कार्यालय के प्रतिनिधियों और प्रधान महालेखाकर (लेखा एवं हक) के अधिकारियों के साथ उपरोक्त बैठक में भाग लिया।

इस बैठक के दौरान प्रधान महालेखाकर (लेखा एवं हक) कार्यालय द्वारा एक प्रस्तुति दी गई और संपत्ति लेखा की तैयारी के लिए आयुक्त भूविज्ञान और खनन द्वारा विभिन्न सुझाव प्रस्तावित किए गए।

मुख्यालय कार्यालय के निर्देश के अनुपालन में, प्रधान महालेखाकर (लेखा एवं हक) कार्यालय के एनआरए सेल के वरिष्ठ लेखा अधिकारी और सहायक लेखा अधिकारी ने 10/10/2022 से 14/10/2022 परिसंपत्ति लेखा के राष्ट्रीय संग्रह को अंतिम रूप देने में भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक के कार्यालय में GASAB विंग की सहायता की। जिसमें तीन राज्यों को शॉर्टलिस्ट किया गया था।

यह बताना सराहनीय था कि परिसंपत्ति लेखा पर सार-संग्रह जारी करने के लिए आमंत्रित ग्यारह राज्यों में से गुजरात राज्य भी उनमें से एक था।

राज्यों में उत्साहजनक परिणामों को देखते हुए, GASAB ने राज्यों में संपत्ति खातों का एक संग्रह तैयार किया है जिसे 20 अक्टूबर 2022 को कोयला और खान माननीय मंत्री द्वारा जारी किया गया था।

प्र. महालेखाकर (लेखा एवं हक), भूविज्ञान और खनन आयुक्त के साथ-साथ सीजीएम और ईपीसीडी कार्यालयों के अन्य अधिकारियों ने भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय में 20/10/2022 को आयोजित राष्ट्रीय संग्रह के विमोचन के अवसर पर गुजरात का प्रतिनिधित्व किया था।

हाथ में परियोजनाएँ :

1. इसके अलावा, जल, भूमि और वन पर संपत्ति खाते, GASAB की आगे की योजनाओं के अनुरूप हैं।
2. प्राकृतिक संसाधनों पर प्रकटीकरण वक्तव्य की तैयारी - गुजरात राज्य के लिए पायलट अध्ययन-२०२१-२२।
3. संसाधनों की आपूर्ति और उपयोग के मानचित्रण पर पायलट अध्ययन।
4. प्रमुख खनिजों की कार्यरत खदानों से निष्कासन की गति।

परिसंपत्ति खाते तैयार करने के लाभ :

परिसंपत्ति खातों की तैयारी से निम्नलिखित विशिष्ट जानकारी प्राप्त होगी :

1. संसाधन एक नज़र में प्रत्येक राज्य की संसाधन उपलब्धता पर एक पेजर दस्तावेज़ को सक्षम करेगा।
2. राज्यों के खनिज भंडार और क्षमता पर अमूल्य जानकारी और डेटासेट प्रदान करें।
3. प्रत्येक संसाधन के भौतिक प्रवाह और मौद्रिक मूल्यों की पहचान की जा सकती है।
4. पिछले कुछ वर्षों में संसाधनों के दोहन की गति से संसाधनों के उपयोग के पैटर्न और संसाधनों की स्थिरता जैसे महत्वपूर्ण इनपुट सामने आएंगे - जिन्हें वर्षों तक जांचा जा सकता है।
5. बाजार मूल्य के साथ संयुक्त रॉयल्टी/राजस्व के संदर्भ में धन मूल्य निर्धारित करने से सार्वजनिक खजाने को मदद करने के लिए रॉयल्टी/शुल्क/करों का विश्लेषण करने में मदद मिलेगी।
6. वर्षों तक खनिजों की स्थिरता से राज्य को वैकल्पिक संसाधनों - आर्थिक और ऊर्जा दोनों संसाधनों की पहचान करने में मदद मिलेगी।
7. अवैध खनन पर कड़ी निगरानी से संसाधन आधार के उपयोग को अनुकूलित करने में मदद मिलेगी और संरक्षण प्रयासों में सहायता करके और पर्यावरणीय क्षरण को रोककर अवैज्ञानिक खनन को प्रतिबंधित किया जाएगा।



मैं यह लेख भारत के नागरिकों के बीच जागरूकता लाने के लिए विभिन्न मंत्रालयों के साथ समन्वय करने के लिए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी), वरिष्ठ प्रबंधन, जीएसएबी (GASAB) सचिवालय के विशाल प्रयासों के लिए अपना आभार व्यक्त करने के लिए प्रस्तुत कर रही हूँ। 'प्राकृतिक संसाधन लेखांकन' (NRA) जो न केवल संसाधनों को बचाएगा बल्कि हमारे ग्रह को भी बचाएगा। हम जमीनी स्तर के अधिकारियों के अमूल्य प्रयासों को सलाम करते हैं जिन्होंने 'प्राकृतिक संसाधन लेखांकन' परियोजना को जीवित रखने के लिए कड़ी मेहनत की है।



“आज खाने में क्या बनाऊँ?”



श्री संदीप रवींद्रभाई घुरंघर
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

भाग 1

संदीप एक नेक दिल इंसान, दूसरों की भलाई करने की सोचने वाला, सहानुभूति रखने वाला, निष्पक्ष रहने वाला एक बड़ा ही दयालु इंसान है। उसे दूसरों की भलाई करना अच्छा लगता है। एक दिन उसकी शादी एक बहुत ही सुंदर, सुशील, सर्वगुण संपन्न वैशाली से होती है।

वैशाली नई थी, नए रिश्ते को समझने का प्रयास कर रही थी कि उसके पति को क्या पसंद है और क्या नहीं, इस बात का पता हर पत्नी को होना चाहिए, जैसे उन्हें किस तरह के कपड़े पहनना पसंद है, उनकी हॉबी क्या है, खाने में क्या पसंद है? ये सब बातें वैशाली जान लेती है। थोड़े ही दिनों में वैशाली अपने परिवार में घुल-मिल जाती है।

संदीप खाने का बड़ा शौकीन है, कहते हैं कि हर पुरुष के दिल तक पहुंचने का रास्ता पेट से होकर गुजरता है, इसलिए वैशाली भी अपने पति के दिल पर राज करना चाहती है, तो उनके खाने-पीने का खास ख्याल रखती है। परिवार में सभी का लेकिन ज़्यादातर संदीप को क्या पसंद है वह वो बनाना चाहती है। इसलिए हमेशा वह संदीप से पूछती है कि “आज खाने में क्या बनाऊँ?”

संदीप, वैशाली से बहुत प्यार करता है, इसलिए वह प्रेम से अपनी पसंद बताता है, लेकिन यहाँ रोजमर्रा भागदौड़ की जिंदगी, ऑफिस का काम, और वैशाली का यह सवाल सुबह सुबह प्यार से पूछना “आज खाने में क्या बनाऊँ” यह सवाल संदीप को रोज परेशान करने लगा था।

एक दिन संदीप ने पूरे हफ्ते की लिस्ट बनाकर सोमवार से रविवार तक सुबह से शाम तक क्या बनाना है वह वैशाली को दे देता है और उसे प्यार से कहता है कि डार्लिंग आप अपने हिसाब से मेरे लिए खाना बनाए, हमको आप के हाथ का खाना ही पसंद है चाहे आप जो बनाओ।

बस फिर क्या था, वैशाली समझ जाती है कि किचनवाला डिपार्टमेंट मेरा है और संदीप राजी तो मैं राजी, आगे वैशाली मैगजीन का सहारा लेती है। उस दिन के बाद वैशाली ने कभी संदीप से नहीं पूछा कि “आज खाने में क्या बनाऊँ?”

भाग 2

संदीप को पार्टियों में, होटल वगैरह में खाना भी अच्छा लगता है, इसलिए वह अपने दोस्तों के साथ कभी होटल में, कभी ऑफिस में पार्टी करता रहता है और हमेशा वैशाली को बताना भूल जाता है। घर पर आने के बाद वैशाली को पता चलता है कि आज पतिदेव बाहर खाना खाके आए हैं।

पार्टी के शौकीन संदीप अगर वैशाली को पहले बता देता तो वो संदीप के लिए खाना नहीं बनाती, अब घर पर जो खाना संदीप के हिस्से का बचा है उसका क्या करे, रात का बचा हुआ खाना पति को कैसे खिलाए और बचा हुआ खाना संदीप को पसंद भी नहीं है इसलिए वैशाली वह खाना अपने लिए रख लेती है, दोस्तों! ये हर घर की कहानी है।

वैशाली का ये समझौता इसलिए है क्योंकि उसे अन्न का अनादर पसंद नहीं, वह अन्न को माँ अन्नपूर्णना का आशीर्वाद समझती है, लेकिन संदीप यह नहीं समझता।

दोस्तों! घर पर अपनी पत्नी, माँ, बहन जो भी सुबह शाम अपना दिमाग लड़ाके, मेहनत करके नाश्ता, भोजन बनाती है और वह भी पुरुषों की पसंद का, रात में जिस खाने की पुरुष जमके तारीफ करता है, वही खाना दूसरे दिन उसके लिए बासी हो जाता है, वही खाने से वह मुकरता है, वह भूल जाता है की बासी खाने में भी अपने घर की औरतों की मेहनत, स्नेह, प्रेम, और समर्पण होता है।

भाग 3

संदीप की इस आदत से वैशाली परेशान थी, तभी उसे एक टी.वी. शो का सहारा मिलता है। उसमें सिखाया गया कि अगर कोई खाना बचे तो उसे रिसाइकल कैसे करें यानी कि उससे कोई नई चीज कैसे बनाए। वैशाली के मन में एक विचार आया।

अब जब कभी संदीप आदत से मजबूर पार्टी करके आता है, तो रात को बचे चावल से वैशाली दूसरे दिन सुबह टी.वी. शो के बताए अनुसार उस चावल की खीर बनाती है, या चावल की रोटियां बनाती है, यहाँ संदीप अपने आप को बहुत बड़ा टेस्टर बताता है, लेकिन उसे पता नहीं चलता कि वह वैशाली की तारीफ कर रहा है कि उसने क्या खीर, क्या रोटियां बनाई है वाह! मज़ा आ गया। वैशाली मुस्कुराती है कि पति को पता भी नहीं चला और दूसरी ओर वह अपनी विजय होने का आनंद लेती है।

एक दिन वैशाली की यह मिलावट संदीप को पता चलती है, क्योंकि हुआयूं कि रात को आलू की सब्जी बची थी तो वैशाली ने सुबह आलू की सब्जी क्रैश करके उसमें मसाले डालके ब्रैडपकोड़े बनाए जो संदीप को बहुत पसंद आए, उसने खाने में एक दो और मांगे लेकिन वैशाली कहा से देती वह तो बचे हुए आलू की सब्जी से बने थे, वैशाली ने सही-सही सच बता दिया, क्योंकि कहा जाता है कि पति-पत्नी के बीच कोई बात छुपाई नहीं जाती है।

संदीप इस कारण थोड़ा नाराज होता है, लेकिन वैशाली उसे प्यार से कहती है, आपको पसंद आया ना? मजा आया ना ? और खाना बर्बाद करना वह आज कल मेरे बजट से बाहर है, आप को क्या आटे-दाल का भाव मालूम है? आज सब्जियों के दाम देखो आसमान पर है, टमाटर रू. १५०/- किलो, सभी सब्जियाँ रू. १००/- किलो तक की हो गई है। हमें तो सरकारी पगार में ही घर चलाना है।

वैशाली आज अपने पति को कहती है कि अन्न का अनादर पाप है। हमारे देश में अन्न को भगवान माना जाता है, लेकिन आज के दौर में लोग अपनी झूठी शानो-शौकत के चलते ये भूल गए हैं। अन्न की पूजा करने की बजाए उसे बर्बाद करते हैं, न जाने कितने घरों में लोग रोज खाली पेट सोते हैं। आज विश्वभर में बेहिसाब खाने की बर्बादी होती है, जिसे रोकना जरूरी है। खाने की बर्बादी से सरकार ही नहीं बल्कि सामाजिक संगठन भी हैरान और चिंतित है। आज पूरी दुनिया में जितना अन्न पकता है, उस का एक तिहाई हिस्सा बर्बाद हो जाता है, और मात्र एक हिस्सा ही खाया जाता है, मतलब कि एक अरब तीस करोड़ टन अन्न बर्बाद हो जाता है, कम से कम उस बर्बाद खाने से दो अरब भूखे पेट भरे जा सकते हैं।

अपनी पत्नी वैशाली के विचार और बातें सुनकर संदीप की नाराजगी दूर होती है। वैसे भी पत्नी के आगे किसकी चली है आज तक ?

संदीप, अपनी पत्नी की अनोखी रसोई के अनोखे व्यंजनों स्वीकारता है और अपने दोस्तों से कहता कि हमारे घर पधारें और अनोखी रसोई के अनोखे व्यंजनों का स्वाद लें।

ईश्वर का अस्तित्व-2



श्री हुसैनी सादिकोट
वरिष्ठ लेखा अधिकारी(सेवानिवृत्त)

गिरनार पत्रिका के 30 वेअंक में “ईश्वर का अस्तित्व” शीर्षक के अंतर्गत अपनी जिंदगी का अनुभव लिखा था। इस अनुभव ने मुझे ईश्वर के अस्तित्व का परोक्ष दर्शन करवाया था। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा इंसान होगा जिनको ईश्वर का साक्षात्कार हुआ होगा। हमारी रोज-ब-रोज की जिंदगी में ऐसी कई वारदातें या घटनाएँ होती हैं जिससे हमें यह प्रतीत होता है कि ईश्वर का अस्तित्व है। ईश्वर की मदद हमें किसी न किसी रूप में मिल जाती है। जब किसी आफत या मुसीबत के समय हमें किसी की मदद मिल जाती है तब हम बोल देते हैं कि 'भगवान ने आपको भेजा है हमारी मदद के लिए' यह शब्द हमारे मुहँ से नहीं, आत्मा से निकलते हैं जो हमें ईश्वर के अस्तित्व का अहसास करवाते हैं।

राजकोट शहर के जुबेली बाग़ में अंग्रेज के समय की लेंग लाइब्रेरी है जो अभी भी मौजूद है। मैं अपने दोस्तों के साथ जुबेली बाग में खेलने जाया करता था। कभी-कभी लाइब्रेरी में भी जाता था। एक दिन लाइब्रेरी में कुछ किताबें देख रहा था तब मेरी नज़र एक किताब पर पड़ी। उस किताब का नाम था '**एक मेजर की आत्मकथा**'। यह किताब मूल रूप से हिंदी में प्रकाशित हुई थी और उसका अनुवाद गुजराती भाषा में भी हुआ था। मैं उस किताब को पढ़ रहा था। एक निवृत्त मेजर ने अपने जीवन के कई प्रसंग उस किताब में लिखे हुए थे। एक प्रसंग मुझे अभी भी याद है जो ईश्वर के अस्तित्व का अहसास करवाता है। उस किताब में यह प्रसंग काफी संक्षिप्त में था। मैं आपके समक्ष अपने शब्दों में प्रस्तुत करता हूँ।

बहुत साल पहले की बात है। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा क्षेत्र में आर्मी के मेजर अपने 15 जवानों की एक टुकड़ी के साथ एक आर्मी केम्प के लिए जा रहे थे, सर्दी का मौसम था, बर्फीले पहाड़ों के बीच ये टुकड़ी गुजर रही थी। सभी जवान ठण्ड से कांप रहे थे। मेजर साहेब और सभी जवानों को चाय पीने की तलब लगी थी। सब लोग सोच रहे थे कि कहीं चाय मिल जाए तो बड़ी राहत मिलेगी। शाम ढल चुकी थी और रात के समय में इस निर्जन बर्फीले पहाड़ी रास्तों में चाय की दुकान कहाँ होगी! मेजर साहब अपने काफिले के साथ आगे बढ़ रहे थे। दूर से एक झोंपड़ी जैसा दिखाई दिया, आगे चलकर देखा तो सब लोग झूम उठे। वो चाय की दुकान थी। नजदीक जाकर देखा तो दुकान में ताला लगा हुआ था। सब जवान निराश हो गए। सबको चाय पीने की प्रबल इच्छा थी। मेजर ने एक जवान को आदेश दिया कि ताला तोड़ दो। उस जवान ने ताला तोड़ दिया। अंदर देखा तो चाय की तमाम सामग्री मौजूद थी पतीले में दूध भी पड़ा था, जवानों ने चूल्हा जलाया और सबके लिए चाय बनाई। दुकान में बिस्कुट भी थे। मेजर और जवानों ने चाय और बिस्कुट खाए, सबके चेहरे पर रौनक आ गई। चाय और नाश्ता करने के प्रश्नात उस दुकान को बंद करके टुटा हुआ ताला लगा दिया और यह टुकड़ी आगे बढ़ी। मेजर साहब को उस दुकान का ताला तोड़ने के लिए आत्मग्लानी हो रही थी। उनके मन में हलचल थी कि ऐसे चोरों की तरह ताला तोड़कर चाय पीना अच्छी हरकत नहीं है। उसने तुरंत टुकड़ी को रुकने का आदेश दिया और खुद उस दुकान की ओर चल पड़े। दुकान खोलकर वहाँ रखे चीनी के डब्बे के नीचे एक हज़ार रुपए रख दिए और टुकड़ी को आगे बढ़ने का इशारा किया।

मेजर साहब अपने जवानों के साथ निर्धारित स्थल पर पहुँच गए। तीन महीने बाद उसी 15 जवानों की टुकड़ी के साथ, उसी रस्ते से मेजर साहब वापस लौट रहे थे। रस्ते में उसी चाय की दुकान के पास रुक गए। इस बार दुकान खुली थी, दुकान का मालिक एक बूढ़ा आदमी था। एकसाथ इतने ग्राहक को देखकर उस बूढ़े आदमी की आँखों में चमक आ गई। अच्छी कमाई की उम्मीद जागी। उसने मेजर साहब और सभी जवानों के लिए चाय बनाई और सबसे बातचीत करने लगा। वो आदमी अपने जीवन में घटी घटनाओं को बता रहा था और बार-बार अल्लाह का शुक्रिया अदा करता था। सभी जवान ध्यान से उस आदमी की बातें सुन रहे थे। एक जवान ने उस आदमी से पूछा “चचाजान आप बार-बार अल्लाह का शुक्रिया अदा करते हो, उस अल्लाह ने आपको ऐसी कंगाल हालत में क्यों रखा है? अल्लाह आपकी मदद क्यों नहीं करता?” उस जवान की बात सुनकर बूढ़े चाचा ने कहा “बेटा ऐसा नहीं है, अगर सच्चे दिलसे अल्लाह को मदद के लिए पुकारोगे तो वो अवश्य मदद करता है। मेरे मुश्किल समय में अल्लाह ने मेरी मदद की है।” जवान ने पूछा अल्लाह ने आपकी किस तरहसे और कब मदद की है। उस बूढ़े आदमी ने सभी जवान और मेजरसाहब को कहा आप सब लोगों को अल्लाह की मदद के बारे में बताता हूँ। ध्यान से सुनो।

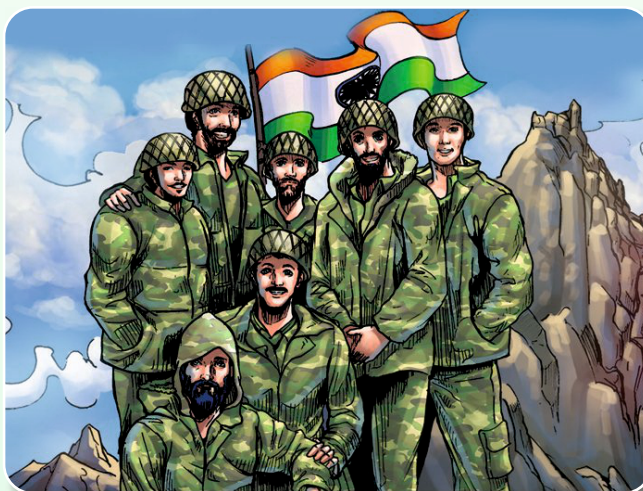
लगभग तीन महीने पहले शाम को मैं दुकान में ग्राहक का इंतजार कर रहा था। सुबह से कोई आमदनी नहीं हुई थी पैसे बिलकुल नहीं थे। तब मुझे मेरे गाँव के एक आदमी ने बताया कि आपका बेटा बेहोशी की हालत में अस्पताल में है, आप जल्दी चलिए। यह बात सुनकर मेरे होश उड़ गए, मैं तुरंत दुकान बंद करके अस्पताल पहुँचा, वहाँ देखा मेरा तेरह साल का बेटा बेहद ज़ख्मी हालत में बिस्तर पर पड़ा था। डाक्टर ने बताया कि आपका बेटा अभी बेहोश है जख्म काफी गहरा है, तुरंत इलाज करवाना पड़ेगा। वर्ना इसका बचना मुश्किल है। इलाज के लिए एक हजार तक खर्च होगा। कल सुबह पैसे लेकर आना ताकि इसका इलाज शुरू हो सके। यह सुनकर मैं निराश हो गया कि इतना पैसा मैं कहाँ से लाऊंगा। मैंने अपने गाँव के आदमी से पूछा कि मेरे बेटे की ये हालत कैसे हुई? उस आदमी ने बताया कि आपका बेटा स्कूल से आ रहा था तब एक जीप में दो बंदूकधारी आदमी उतरे और आपके बेटे को उस जीप में ले गए। गाँव के लोग बता रहे थे वो लोग आतंकवादी थे। फिर शाम को उसी जीप में आपके बेटे को इस हालत में फेंक कर चले गए। सबको लगा कि आपके बेटे की लाश को फेंका है, मैंने उसके पास जाकर देखा तो साँसे चल रही थी। मैं तुरंत अस्पताल लेकर आ गया और आपको बुलाने आ गया। उस दिन मैंने उस आतंकवादी को बहुत बद्दुआ दी थी, मेरे अन्दर से आवाज़ आ रही थी कि मेरे बेटे ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था। उस गाँव के आदमी ने कहा कि गांववाले बता रहे थे कि दरअसल वो लोग आर्मी अफसर के बेटे को अगवा करना चाहते थे पर गलती से आपके बेटे को उठा ले गए और जब पता चला तो आपको बेटे को छोड़कर भाग गए।

उस रात में सोया नहीं, पूरी रात अल्लाह से दुआएँ मांगता रहा कि या अल्लाह मेरे पास इतना पैसा नहीं कि मैं अपने बेटे का इलाज करवा सकूँ। बस अब तेरा ही सहारा है, तू ही मुझे मदद कर सकता है। मैं सुबह जल्दी उठकर दुकान के लिए तैयार हो गया, सोचा जल्दी दुकान खोलूँगा तो आमदनी भी ज्यादा होगी। अच्छी आमदनी की उम्मीद के साथ मैं दुकान पहुँचा। वहाँ जाकर देखा तो दुकान का ताला टुटा हुआ था। मैं समझ गया, मेरी दुकान पर लुटेरे आए होंगे। इस निर्जन स्थल पर चोर-लुटेरे अक्सर आते हैं। मैंने अल्लाह से फ़रियाद की, “या अल्लाह मेरी दुकान में ऐसा कौन-सा खजाना छुपा हुआ था कि तूने मेरी दुकान पर चोर भेज दिए।” अच्छी आमदनी की उम्मीद टूट गई। दुकान में चाय की पत्ती, चीनी, दूध और कुछ नाश्ते का सामान पड़ा था वो सब लुटेरे ले गए होंगे। बेटे के इलाज की परेशानी क्या कम थी, एक परेशानी और आ गई। मेरा अल्लाह से भरोसा उठने लगा था। मैंने अत्यंत दुखी मन से ताला हटाया और दुकान खोली। दुकान में देखा तो पत्तीले में दूध था लेकिन चाय का बर्तन और कप देखकर लग रहा था कि किसी ने दुकान में चाय बनाकर पी है। बिस्कुट और

नाश्ता भी किया होगा। मैंने दुकान का सारा सामान चेक कर लिया। कोई खास नुकसान नहीं हुआ था। मेरी नजर चीनी के डब्बे पर पड़ी, डिब्बा उठाया तो नीचे 1000 रुपए पड़े हुए थे। मैं सोच में पड़ गया कि इतने रुपए तो मैंने कभी एकसाथ नहीं देखे। उस दिन 1000 रुपए मेरे लिए मेरे बेटे की जिंदगी की कीमत थी। मैं तो समझा दुकान में चोरी हुई है लेकिन यहाँ तो कोई रुपए छोड़ गया है। मैं काफी देर तक सोचता रहा तब मेरी नजर चाय बाले बर्तन और कप पर पड़ी फिर मेरे दिमाग में एक नई रौशनी के साथ बात समझ में आ गई। उस रात मैंने अल्लाह से पूरे मन से अपने बेटे के इलाज के लिए मदद करने के लिए दुआएँ की थी। उस दुआओं के फलस्वरूप अल्लाह अपने फरिस्तों के साथ उस रात मेरी दुकान पर आए और सबने चाय और नाश्ता भी किया, बाद में चीनी के डिब्बे के नीचे 1000 रुपए भी रखे जो मेरे बेटे के इलाज के लिए मुझे जरूरत थी। मैं खुशी से पागल हो गया, अल्लाह का शुक्रिया अदा किया और तुरंत अस्पताल जाके बेटे का इलाज करवाया। चाचा ने सभी जवानों से कहा देखो! दुआओं में बड़ी ताकत होती है। तुम भी जब-जब सच्चे मन से अपने ईश्वर को मदद के लिए पुकारोगे तो वो तुम्हें अवश्य मदद करेंगे।

उस बूढ़े आदमी की बात सुनकर सभी जवान स्टेच्यु हो गए और मेजर साहब की ओर देखने लगे। सब हकीकत जानते थे। मेजर साहब ने सबको इशारे से चुप रहने के आदेश दे दिए और उस बूढ़े आदमी की ओर बढ़े और बोले, “चचाजान! आपकी बातें सुनकर हम सब लोग भी भावुक हो गए हैं, आपने बिल्कुल सही कहा दुआओं में बड़ी ताकत होती है। मुझे खुशी हुई कि आपको सही वक़्त पर अल्लाह की मदद मिल गई और आपके बेटे का इलाज हो गया।” मेजर साहब ने चाय के पैसे दिए और सभी जवानों को चलने का इशारा किया। रस्ते में एक जवान ने मेजर साहब से पूछा सर आपने उस चायवाले दुकानदार को सही बात क्यूँ नहीं बताई। मेजर ने बताया कि मैंने उस आदमी की आँखों में ईश्वर के प्रति आस्था देखी थी। वो ये मानता था कि अल्लाह और उनके फरिश्ते उनकी दुकान पर मदद करने आये थे। मैं उनकी आस्था को तोड़ना नहीं चाहता था। वैसे देखा जाये तो ये मदद मेरी नहीं बल्कि ईश्वर की मदद है। उस दिन हमने चोरों की तरह दुकान में घुसकर चाय और नाश्ता किया, बाद में मेरी आत्मा से आवाज़ आई कि हमने ग़लत किया है और मैंने वापस जा के चीनी के डब्बे के नीचे पूरी तनख्वाह रख दी। मेरी आत्मा से आवाज़ आना ईश्वर का संकेत था। उस बूढ़े आदमी ने दिल से दुआ की थी और ईश्वर ने इनको मदद पहुँचाने के लिए मुझे चुना था।

उक्त प्रसंग को जब मैंने पढ़ा था तब में छोटा था। लेकिन मैंने महसूस कर लिया था कि ईश्वर हमें किसी न किसी स्वरूप में मदद जरूर करता है। इसके बाद खुद मैंने ईश्वर की मदद का अनुभव किया था जो मैंने गिरनार पत्रिका के 30वें अंक में लिखा था। ये बात तो तय है कि चाहे हम ईश्वर को माने या ना माने, उनकी मदद हमें किसी भी तरह मिल ही जाती है। ईश्वर के प्रति आस्था हमें कभी नहीं छोड़नी चाहिए।





श्री राहुल धायल
सहायक लेखा अधिकारी

हमारा प्यारा भारत विविधताओं का देश है। उत्तर में हिमालय पर्वत श्रृंखला, पश्चिम में थर मरुस्थल व रण, दक्षिण में हिन्द महासागर और पूर्व में समृद्ध जैव विविधता का संगम है। प्रकृति ने इस देश को सभी रंगों से कलमबद्ध किया है।

हमारा वृत्तान्त :

मैं राजस्थान से सम्बन्ध रखता हूँ जो कि अपने समृद्ध व गौरवशाली इतिहास के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। विदेशी आक्रान्ताओं के हजारों सालों के आक्रमण के बाद भी इस प्रदेश ने अपनी विरासत को संजो रखा है। यह प्रदेश अपने ऐतिहासिक किले, महल, कला व संस्कृति के लिए विश्व विख्यात है। यह अपनी मेहमाननवाजी के लिए जाना जाता है। इस प्रदेश के लोग अपने व्यापार व नौकरी के लिए उत्तर व दक्षिण भारत में प्रायः भ्रमण करते हैं, परन्तु पूर्वोत्तर भारत में प्रदेशवासियों का आवागमन काफी कम है। अतः इस बार मैंने और रविन्द्र ने सपरिवार उत्तर-पूर्व भारत को घूमने के लिए चुना। अब उत्तर-पूर्व भारत में आठ प्रदेश हैं। समस्या ये आ खड़ी हुई कि शुरुआत कहाँ से की जाये व खत्म कहाँ किया जाये। इसका समाधान ये निकला कि यदि आप सभी उत्तर-पूर्वी राज्यों की समृद्ध संस्कृति व परम्परा से परिचित होना चाहते हैं तो शिलोंग से शुरुआत करें।

मैं आगे के वृत्तान्त पर जाने से पहले भारत सरकार व कैंग को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने अपने कर्मचारियों के लिए अवकाश यात्रा रियायत (LTC) की सुविधा प्रदान की हुई है जिसके तहत सरकारी कर्मचारी देश के विभिन्न हिस्सों व अपने घर की यात्रा को बिना किसी बाधा के पूर्ण कर सकें।

लमशिलोंग (LUMSHILONG) व फांगपूई (PHAUNGPU)।

अब आगे के वृत्तान्त पर चलते हैं, कहीं भी घूमने के दो चरण होते हैं- प्रथम वहाँ तक जाना व वापसी। प्रथम कार्य के लिए हमारी मदद हमारे साथी कार्मिक श्री वैभव मित्तल व श्री रतिलाल जी ने की। उन्होंने हमें सारे खर्च के बारे में विस्तार से बताया व पुनर्भुगतान के सम्बन्ध में जानकारी दी।

द्वितीय चरण के अंतर्गत स्थानीय भ्रमण व रुकने और खाने पीने की समस्या का निवारण करना था। इस कार्य को हमने दो चरण में बांटा। पहला रुकने का व दूसरा भ्रमण का। रुकने की व्यवस्था हमने भारतीय डाक के सरकारी अतिथि गृह में दीदी के द्वारा करवाई।

अब मैं आगे की यात्रा पर आपको ले चलता हूँ जो शिलोंग व उसके आस पास के सभी पर्यटन स्थलों की सम्पूर्ण जानकारी देगी। पहले दिन हम अहमदाबाद से उमरोई से होते हुए कोलकाता पहुंचे। यह एयरपोर्ट मध्य शिलोंग से ३० किलो मी की दूरी पर है। यहाँ पहुँचने का निकटतम रेलवे स्टेशन पलटन बाजार है। जो शिलोंग से ९० किलो मी दूर है। एयरपोर्ट से हमें टूर ऑपरेटर द्वारा तयशुदा स्थान तक छोड़ दिया गया। एयरपोर्ट से गेस्ट हाउस तक के सफ़र के दौरान ही यह आभास हो गया था की धरती माँ के इस स्थान को अनुपम और अप्रतिम सौन्दर्य से नवाजा है। प्रकृति के सौन्दर्य के साथ साथ शांत, मनोरम और घने जंगल और हरी भरी घाटियाँ देखें।

रस्ते में उमंगोट नदी आई, यह मेघालय के पश्चिम में जयंतिया पहाड़ी जिले में जयंतिया पहाड़ी के निचले भाग में स्थित एक छोटे से शहर डौकी से होकर बहती है। यह एक व्यस्त शहर है जहाँ से भारत व बांग्लादेश के बीच व्यापार मार्ग के रूप में कार्य करता है। ड्राइवर द्वारा हमें शिलॉंग व इसकी संस्कृति के बारे में जानकारी दी गयी। वह बहुत ही मृदु स्वभाव के व्यक्ति है। उनका ज्ञान असीमित है। अगले दिन हमारा पड़ाव भारत-बांग्लादेश सीमा पर बहने वाली डौकी नदी था। यह स्थान शिलांग से लगभग 105 किलोमीटर दूर है। यहाँ नेशनल हाईवे 206 द्वारा पहुंचा जा सकता है। पूरी यात्रा के दौरान एक तरफ गहरी घाटियाँ, दूसरी तरफ ऊँचे-ऊँचे पहाड़, पास में बहती नदियाँ सभी मन को रोमांचित कर रही थी। आप हमारे आनन्द का अंदाज़ा लगा सकते हैं कि धोरों के बाशिंदों ने यह सब पहली बार एक साथ देखा था। 4 घंटे के सफ़र के बाद हम डावकी नदी पर पहुँचे। डावकी नदी पर पहुँचने के बाद के दृश्य को शब्दों में बयान नहीं कर सकते हैं। मेरा आप सभी से अनुरोध है कि एक बार यू-ट्यूब पर इस नदी को सर्च करें। यकीन मानिए आपका मन उस स्थान पर जाने के लिए मचल उठेगा। यहाँ का पानी इतना साफ है कि नदी का तल 15 फीट गहरा होने के बाद भी साफ-साफ दिखाई दे रहा था। वहाँ पर हमने नौका विहार के द्वारा लगभग दो घंटे नदी में भ्रमण किया। नौका विहार एक तयशुदा मैप के द्वारा आपको बांग्लादेश सीमा तक ले जाते हैं वे वहाँ से वापस ले आते हैं।

इस भूभाग में शाम को सूर्य देवता जल्दी अस्त हो जाते हैं। अतः बच्चों को ध्यान में रखकर हम वापसी के लिए चल पड़े व शाम को अँधेरा होने से पहले वापस शिलॉंग आ गये। यह एक अविस्मरणीय दिन था। अगले दिन हमारा पड़ाव एशिया का सबसे साफ-सुथरा गाँव मावलिनॉंग था। यह मेघालय के पूर्वी खासी हिल्स जिले में स्थित गाँव है। इसके बारे में यह कहा जाता है कि यह गाँव भगवान का बगीचा (God's own Garden) है। यह शिलॉंग से 90 किमी. दूर स्थित है। मैं यहाँ आपके सामने एक बात का उल्लेख करूँगा कि बाकि भारत में बेटियों के अधिकार/कर्तव्य के बारे में केवल चर्चा की जाती है, जबकि यहाँ खासी लोगों की परम्परा है कि मावलिनॉंग में संपत्ति माँ से उसकी सबसे छोटी बेटी को दी जाती है, जो की माँ का उपनाम भी रखती है। यहाँ मातृवंशीय समाज है। तयशुदा कार्यक्रम के तहत ट्रेवल्स द्वारा गाँव के मुखिया द्वारा हमें वहाँ की समृद्ध इतिहास व संस्कृति की जानकारी दी गई। यह हमारे जीवन का एक अलग ही अनुभव था। वह बहुत ही मृदुभाषी औरत थी व अपनी विरासत व संस्कृति का उन्हें अथाह ज्ञान था। उन्होंने पूरे गाँव का हमें भ्रमण करवाया व ग्रामवासियों के कार्यों व दायित्वों के बारे में बताया। हमारा उनसे विदा लेने का मन नहीं था, लेकिन फिर मिलने के वादे व राजस्थान भ्रमण के वादे के साथ हम चल पड़े। उन्होंने हमें वापसी पर कुछ वहाँ के स्थानीय उत्पाद व दोनों बच्चों के लिए फल व स्थानीय मेवे दिये। हम मारवाड़ी लोग अपने आतिथ्य के लिए जाने जाते हैं, परन्तु उनका आतिथ्य हमारे से भी अप्रतिम था। हमारा सौभाग्य है कि दिसंबर 2023 में हमें उनके परिवार को राजस्थान भ्रमण करवाने का सौभाग्य मिलेगा। हम उत्तर व पश्चिम भारतीय जिन समस्याओं से गुजर रहे हैं, वे वहाँ न के बराबर हैं।

हमारा अगला पड़ाव प्रकृति निर्मित पुल/सेतु थे। यह एक प्रकार का सरल निकंबन पुल है जो पेड़ को आकार देकर जीवित पौधों की जड़ों से बनता है। ये मेघालय के उत्तर-पूर्वी भाग में आम है। यह खासी व जयंतिया लोगो द्वारा रबर अंजीर के पेड़ की हवाई जड़ों से हस्तनिर्मित है। अधिकांश पुल समुद्र तल से 40 व 1200 मीटर के बीच उपोष्ण कटिबंधीय नाम चौड़ी पट्टी वाले जंगल की खड़ी ढलानों पर है। यह किसी जादू की तरह है लेकिन कोरी कल्पना नहीं है। पुल बनाने का यह तरीका सदियों से इस्तेमाल किया जाता है। ये लोग पुल बनाने वाले हवाई जड़ों को एक बांस मचान पर बुनते हैं व धीरे-धीरे इन जड़ों को नदी के उस पर ले जाते हैं अंत में इन जड़ों को नदी के एक दुसरे किनारे पर लगाया जाता है। आकार देने के तुरंत बाद पुलों का उपयोग नहीं किया जा सकता है। चलने वाले लोगों के वजन का सामना करने के लिए पर्याप्त मजबूत होने के लिए जड़ों को कम से

कम 15 साल की आवश्यकता होती है। पुल की मजबूती के लिए बांस की मचान को दो साल में बदल दिया जाता है। सबसे लम्बा पुल (जीवित पुल) 175 फीट तक फैला है व यह पूर्वी खासी हिल्स जिले के मावकिनौट के पास है। इन पुलों को बनाने का काम दशकों का काम है। इन्हें पूरा करने काम कई पीढ़ियां करती हैं। जिन नए पुलों को आज बनाया जा रहा है, उनकी देखभाल आने वाली पीढ़ियां करेंगी। इस तरह से हर पुल समुदाय की आने वाली पीढ़ियों के लिए एक तोहफा है। प्राकृतिक सम्पदा का प्रबंधन व संरक्षण करना मेघालय संस्कृति का हिस्सा है। हमने पहले से ही लिविंग ब्रिज फाउंडेशन के संस्थापक मोर्निंगस्टार खोंगथाव से मिलने का समय ले रखा था, उन्होंने विस्तार से इसके बारे में बताया। आज का दिन इन दो खूबसूरत व दर्शनीय संस्थाओं के साथ ही खत्म हो गया।

अगले दिन का पड़ाव चेरापूँजी था। इस दिन हमने चेरापूँजी व आस-पास के कुदरती सौन्दर्य का आनन्द लिया। चेरापूँजी को सोहरा के नाम से भी जाना जाता है। यह पूर्वी खासी हिल्स जिले में स्थित है। यहाँ कहसी लोगों की बहुलता है। शिलोंग से इसकी दूरी 54 किमी. है। यहाँ सबसे पहले हमने नोहकलिकई वॉटरफॉल का भ्रमण किया। यह भारत का सबसे ऊँचा वॉटरफॉल है, इसकी ऊंचाई 370 मीटर है। यह मेघालय का गौरव कहलाता है।

अगला पड़ाव मौसमाई गुफा था। यह एक लुभावनी भूलभुलैया है। जब रोशनी चूना-पत्थर पर पड़ती है तो अनगिनत रंग व प्रकाश के पैटर्न का निर्माण होता है। इसका प्रवेश शुल्क 10 रुपये है। यहाँ पास में ही इको पार्क है। यह एक पठार पर स्थित है। यहाँ से आप बांग्लादेश के सिलहट जिले के मैदानों के दृश्यों का आनन्द ले सकते हैं। यहाँ एक क्रिस्टल क्लियर वाटर स्ट्रीम भी है।

अगला पड़ाव नोहसंगीथिंग फाल्स है, यह सात खड्डों वाला झरना है। इसको सेवेन सिस्टर्स वॉटरफॉल के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ जब बारिश ज्यादा होती है, तब बारहमासी इन्द्रधनुष बनता है। पूरे दिन भ्रमण के बाद शाम को वापस शिलोंग की तरफ प्रस्थान किया। अगले दिन में हमने डॉन बास्को संग्रहालय का भ्रमण किया। यह एक संग्रहालय के साथ-साथ स्वयं के प्रकाशनों, अनुसंधान विंग, सांस्कृतिक गतिविधियों से भरे कैलेंडर, समाचार पत्र के साथ एक संस्थान है। यह सात मंजिला आकर में षटकोणीय इमारत है। इसे शिलोंग का वास्तुशिल्प गौरव कहा जाता है। इसकी स्थापना सांस्कृतिक बुद्धिमत्ता व जागरूकता को लोकप्रियता बनाने के लक्ष्य के साथ की गई। यह एक समग्र शैक्षिक संस्थान है। यहाँ 16 दीघाएँ हैं, व प्रत्येक अलग पहलू से सम्बंधित है। 7वीं मंजिल पर सुंदर खुली हवा में स्काईवॉक है, जहाँ से आपको शिलोंग शहर का विहंगम दृश्य दिखाई देता है व यहाँ सुंदर संगीत की व्यवस्था भी है। इसको देखने के लिए कम से कम एक पूरा दिन चाहिए। इसकी टिकट की कीमत 100 रुपये है। आज का पूरा दिन इसी संग्रहालय में बीत गया। जय व रिशिका ने यहाँ खूब आनंद लिया।

अगले दिन हमने शिलोंग शहर में स्थानीय तौर पर घूमने का निश्चय किया। इस दिन हमने लेडी ह्यूट्रै पार्क, वार्ड'स झील, कप्तान विलियम संगमा संग्रहालय, कैथड्रल चर्च का भ्रमण किया। शाम को पुलिस बाजार, बारा बाजार में हाथ से बूनी हुई शाल, हस्तशिल्प केन-वर्क व अन्य कपड़ों आदि की खरीददारी की।

अगले दिन का हमारा कार्यक्रम मौफलांग सेक्रेड फारेस्ट घूमने का था। यह पूर्व खासी हिल्स जिले में शिलोंग से 27 किमी. दूर स्थित है। यह 1890 के दौरान प्रेसबिटेरियन गिरजे मिशनरी व चिकित्सा गतिविधियों का केंद्र रहा है। यह डॉ विलियम विलियम्स का कार्यक्षेत्र रहा है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार इस जगह देवताओं का अदृश्य वास है व मान्यता है कि यहाँ से फूल-पत्ती ले जाने से भी वे नाराज हो जाते हैं। वन का अधिकार व उत्तरदायित्व दोनों ही स्थानीय खासी समुदाय के पास है। मौफलांग के जैविक विविधता की समृद्धि व भूमिगत

जल भंडार का आधार स्थानीय खासी समुदायों की आस्था व पारंपरिक जीवन शैली है। यहाँ पाषाण शिलाएं हैं जो पिता, मामा व माँ की परिचायक है। इस जगह जाकर आपको एक ही सकारात्मक उर्जा मिलती है। ऐसा मन करता है कि यहाँ से बाहर न जायें। यहाँ से हम रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द सांस्कृतिक केंद्र में गये जहाँ इनके द्वारा संचालित संस्था व कार्यक्रम के बारे में जाना। वापसी में हमने वायु सेना म्यूजियम देखा व इसकी कैटीन में दोपहर का भोजन किया। उसके बाद एलीफैंट झरना का भ्रमण किया। यह दो स्तरीय का एक खूबसूरत झरना है। इस दिन का अंतिम पड़ाव शिलॉंग पीक था, जो एक चोटी है जहाँ से शिलॉंग शहर का विहंगम दृश्य दिखाई देता है।

अगले दिन प्रातः काल कुछ देर हम गोल्फ कोर्स में गये। शाम को हमारा वापसी का कार्यक्रम था। इन खूबसूरत यादों के साथ यह सफ़र समाप्त हुआ।

यहाँ हम कुछ संस्थाओं जैसे महालेखाकार कार्यालय, राजकोट, कार्यालय मुख्य महा डाक पाल, शिलॉंग, किन्ग्लिहिल्स ट्रेवल्स, लीनिंग ब्रिज फाउंडेशन, मावलिनींग समिति का धन्यवाद ज्ञापित करना चाहेंगे जिनके बिना यह सबकुछ संभव नहीं था।



अगस्त्य की सूझबूझ



श्री मुकेश कुमार शर्मा
सहायक लेखा अधिकारी

सन् 2016 की बात है, राजस्थान का फुलेरा गांव सूखे की मार झेल रहा था। फुलेरा में पानी की दिनोदिन कमी होती जा रही थी। पशुओं के लिए चारा मिलना बहुत मुश्किल हो रहा था। धीरे-धीरे संकट इतना गहरा गया कि पशुओं की मौत भी होने लगी। फुलेरा गांव के सभी निवासी बहुत बेचैन होने लगे। कुछ धनी लोग तो बाहर से पानी मंगवा लेते, लेकिन अधिकतर ग्रामीण वासियों के लिए जीना दुश्वर हो गया। कुछ ग्रामीण तो गांव के बाहर पलायन करने लगे। उस वर्ष बारिश भी बहुत कम हुई जैसे तैसे वक्त निकलने के लिए सभी ग्रामीण भगवान से प्रार्थना करते रहे। जिधर देखो निराशा ही निराशा थी।

जहां गांव की जनता खेती पर निर्भर थी। उनके लिए खाने-पीने के लाले पड़ने लगे। उसी वर्ष सन् 2016 में गांव में 4 साल बाद 'अगस्त्य' नाम का एक होनहार युवा अपनी 4 वर्ष की पर्यावरण विज्ञान में इंजीनियरिंग की डिग्री लेकर गांव में आया। उसने गांव की भयावह स्थिति देखी तो उसको बहुत दुख हुआ और उसे किसी कंपनी में कार्य करने की जगह अपने गांव फुलेरा की स्थिति सुधारने का दृढ़ संकल्प लिया। अगस्त्य ने पानी की समस्या को सुलझाने के लिए पूरी योजना बनाई। बनाई गई योजना का एक हिस्सा रैन वाटर हार्वेस्टिंग (वर्षा जल संचयन) को भी रखा।

वर्षा जल संचयन

इस प्रक्रिया के तहत वर्षा के पानी को एक निर्धारित किए हुए स्थान पर जमा किया जाता है और जमा किए हुए पानी को तरह-तरह से अलग-अलग उपयोग में लाया जाता है।

1. सतह जल संग्रह - इसके तहत वर्षा के पानी को बहने से रोक कर छोटे छोटे जलाशय या तालाब बनाए जाते हैं। तालाब या जलाशय बनाने के लिए अगस्त्य ने फुलेरा गाँव को छः भागों में बाँटा और उन छः भागों में नीचले स्थानों पर छोटे-छोटे तालाब बनाए गए और बारिश के पानी को तालाब तक लाने के लिए नालियां भी बनाई गईं।

2. भूगर्भ जल संचयन - भूगर्भ जल संचय के लिए प्रत्येक 50-60 घरों का बारिश के समय में आने वाले जल को भूगर्भ में भेजने के लिए गड्ढे खोदकर उसको छतों के आने वाले पानी को पाइप के माध्यम से उन गड्ढे से जोड़ा गया। उन गड्ढे के ऊपर दीवार लगाकर जाली से बंद कर दिया गया, जिससे किसी के गिरने का डर न रहे।



इस तरह जल संचयन के इन दो महत्वपूर्ण तरीकों को गाँव के अधिकतर लोगों ने अपनाया। गाँव वालों ने जल संचयन की विधियों को अपनाया उससे अगस्त्य का भी हौसला बुलंद हुआ। अब अगस्त्य के साथ-साथ सभी ग्रामवासियों को बारिश का इंतजार था। लेकिन अभी जुलाई-अगस्त के महीने में काफी वक्त था। लेकिन कहा जाता है **“जब आप किसी चीज को पूरे मन से चाहते हो तो सारी कायनात आपको उससे मिलाने के लिए जुट जाती है।”**

अब सागर में चक्रवाती हवाओं की वजह से गुजरात और राजस्थान में काफी बारिश हुई। जहां एक तरफ राजस्थान और गुजरात की अधिकतर जगहों पर बाढ़ के हालात थे वहीं फुलेरा गांव में अगस्त्य की सूझबूझ और गांव वालों के सहयोग से ना केवल बाढ़ के दुष्परिणाम से बचे रहें बल्कि जनसंचय के साधनों से अधिकतर बारिश का पानी गांव के तालाबों में चला गया, और कुछ हिस्सा घरों की छतों से भूमिगत जल संचयन के माध्यम से भूमिगत जल के रूप में चला गया। लगातार तीन-चार दिन बारिश होने के बावजूद भी फुलेरा गांव में स्थिति नियंत्रित रही। अब चक्रवाती हवाओं की वजह से बारिश भी बंद हो चुकी थी। फुलेरा गांव के अधिकतर तालाब कुछ भर चुके थे और भूमिगत जल में भी कुछ असर हुआ।

यह सब देख कर गांव वालों में उत्साह था कि जो गांव सूखे की मार से इतना परेशान था उसके पास सभी की मेहनत से बनाए गए तालाबों में अब कुछ पानी था। फुलेरा गांव के लोगों द्वारा जल संचयन के साधनों को अपना ने से पानी के संचयन की मात्रा बढ़ने लगी।

उस बारिश के पानी को साफ करके पीने के पानी के उपयोग में लिया जा सकता था। इसके लिए गांव के सरपंच ने अपने गांव के सरपंच निधि के पैसे से गांव के लिए एक वाटर प्यूरीफायर की मशीन ले आए जिससे फुलेरा गांव वालों को शुद्ध जल भी उपलब्ध होने लगा। 'अगस्त्य' के कहने पर गांव वालों ने सामान्य फसलों के साथ-साथ ज्वार, बाजरा रागी जैसे मोटे अनाज की भी पैदावार करने लगे। जिससे पानी की खपत कम होती और फसलों से पैसा भी ज्यादा मिलता, जिससे फुलेरा ग्रामवासियों की प्रति व्यक्ति आय भी बढ़ने लगी। उन्होंने दिनों 'अगस्त्य' ने अखबार में ग्रामीण पर्यटन के बारे में एक लेख पढ़ा जिससे पढ़कर अगस्त्य ने सोचा, क्यों नहीं ? इसे फुलेरा गांव में भी लागू किया जाए। इसके लिए अगस्त्य ने ग्रामीणों से विचार-विमर्श किया और जो इसके लिए तैयार हो गए उनसे खेतों में जगह की उपलब्धता के अनुसार प्राकृतिक कमरों का निर्माण किया। जिन की दीवारों की ईंटें गाय, भैंस के गोबर से बनी हुई थी और छते घास, फूस और बांस की लकड़ी से बनी हुई थी तथा दीवारों पर मुलतानी मिट्टी से लेप किया हुआ था। कमरों की सजावट के लिए अलग-अलग प्रकार की ग्रामीण पृष्ठभूमि की चित्रकारी भी की गई। तथा दीवारों पर पुराने अस्त्र-शस्त्र, धातु के स्मृतिचिन्ह और मिट्टी से बर्तनों और ग्रामीण पृष्ठभूमि की चित्रकारी से सजाया गया। जिसकी खूबसूरती देखते ही बनती थी।

फुलेरा गांव वासियों ने अगस्त्य की सलाह अनुसार ग्रामीण पर्यटन के अलग-अलग खेतों में कुछ कमरे तैयार कर लिए। फिर अगस्त्य ने फेसबुक और यूट्यूब पर उसकी **“फुलेरा ग्रामीण पर्यटन- Phulera Rural Tourism”** फेसबुक पेज और यूट्यूब पर चैनल बनाकर मार्केटिंग भी की जिसमें फेसबुक पर उन कमरों की फोटोस डाली गई और उनके बारे में बताया गया तथा यूट्यूब पर वीडियोस डाले गए।

कुछ दिन तक तो कोई प्रतिक्रिया दिखाई नहीं दी, फिर एक विदेशी कपल ने फेसबुक के माध्यम से गांव में भ्रमण की इच्छा जाहिर की। उसके बाद फुलेरा गांव में वह विदेशी कपल 3 दिन तक फुलेरा में भ्रमण किया जिसमें उन्होंने सुबह उठने पर खेतों की सैर करना, फिर पशुओं को चारा खिलाना, उनका दूध निकालना, दही से मक्खन निकालना, चूल्हे पर रोटी बनाना, घुड़सवारी करना जैसी गतिविधियों का आनंद लिया जो कि विदेशी कपल को बहुत पसंद आया वहां खानपान के लिए ऑर्गेनिक फल और सब्जियां उपयोग में लिए जा रहे थे।

विदेशी कपल ने अपने सभी अनुभवों के वीडियो बनाकर फेसबुक और यूट्यूब पर डालें जिससे बहुत लोगों ने देखा और फुलेरा ग्रामीण पर्यटन बहुत प्रसिद्ध हुआ। जिससे और ज्यादा पर्यटक फुलेरा के प्राकृतिक वातावरण का आनंद लेने के लिए आने लगे।

पर्यटक फुलेरा भ्रमण के बाद जब वापस जाते तब फुलेरा से वहां के लोगों के द्वारा बनाए गए मसाले, घी, तेल और अन्य प्रतिदिन उपयोग में आने वाली वस्तुएं भी ले जाने लगे। इससे फुलेरा वासियों की अर्थव्यवस्था की स्थिति में बहुत सुधार हुआ। एक तरफ जहां उनको अपने खेतों में बनाए गए कमरों की वजह से अच्छा किराया मिलता उसके साथ-साथ जो वस्तुएं पर्यटक ले जाते उनसे भी उनकी अच्छी आवक होने लगी। सरकार के द्वारा चलाए गए सोलर सब्सिडी के तहत ग्रामीणों ने अगस्त्य के सलाह अनुसार कम कीमत में सभी ने अपनी छतों पर सोलर प्लेट्स भी लगवा लिए। इसके साथ ही जो बंजर खेत थे जो किसी काम में नहीं आ रहे थे। वहां पर भी सोलर प्लेस लगवा लिए जिससे विद्युत का उत्पादन किया जा सकता था।

फुलेरा गांव के कुछ युवा जो पढ़े-लिखे थे, वह फुलेरा को छोड़कर बड़े शहरों में नौकरी के लिए चले लगे थे तथा वहीं पर रहने लग गए थे। जब फुलेरा की उन्नति के बारे में उन्होंने सुना। तो कुछ पढ़े लिखे युवा भी अपना योगदान देने के लिए फुलेरा वापस आ गए और जब वापस आए तो उन्होंने देखा कि गांव के कुछ युवाओं ने पढ़ाई तो की है लेकिन वो बेरोजगार हैं। तो उन युवाओं ने उन्हें 5-6 महीने की कंप्यूटर की शिक्षा दी और गांव में ही कुछ कंप्यूटर लगाकर उन को रोजगार के साधन उपलब्ध कराएं। जिससे गांव के पढ़े-लिखे युवा गांव में ही रहकर रोजगार भी कर सकें।

जो गांव कभी पानी की भयंकर मार झेल रहा था। वही फुलेरा गांव, अगस्त्य की सूझबूझ और गांववालों की समझदारी, सहयोग और कठिन परिश्रम से ना केवल पानी के लिए आत्मनिर्भर हुआ बल्कि वर्तमान में पानी की जरूरत और उपलब्धता के हिसाब से फुलेरा के तालाबों में 3 साल तक उपलब्ध करने जितना पानी उपलब्ध था।

इसके साथ गांव में पैदा होने वाली फसलों, मोटा अनाज, सब्जियां, दूध, घी की भी बिक्री से अच्छी आमदनी हो रही थी। ग्रामीण पर्यटन से अब गांव में पर्यटक भी आ रहे थे जिनसे भी अच्छी आवक हो रही थी। सोलर ऊर्जा से गांव में विद्युत का उत्पादन एवं युवाओं को अब गांव में ही कंप्यूटर शिक्षा की वजह से, गांव में ही रोजगार मिल गया था जिससे वह गांव में अपने माता पिता के साथ प्राकृतिक वातावरण में रह कर अच्छी आमदनी कर रहे थे।

अगस्त्य की सूझबूझ से फुलेरा '**फुलेरा मॉडल गाँव**' के नाम से जाना जा रहा था। सभी प्रकार से फुलेरा को आत्मनिर्भर बनाने की वजह से ग्रामीण अगस्त्य के प्रति बहुत आभारी थे। राज्य सरकार और केंद्र सरकार ने अगस्त्य को अनेक पुरस्कारों से नवाजा। इसके साथ फुलेरा गांव वासियों को भी समझ में आ गया कि पर्यावरण को बचाना कितना जरूरी है।

सीख - इस कहानी से सीख मिलती है कि अगर लगन और समझदारी से मिलजुल कर कोई कार्य किया जाए तो बड़ी से बड़ी परेशानी का भी निदान किया जा सकता है तथा मानव जीवन किस तरह पर्यावरण पर निर्भर है। प्रकृति को संरक्षित करके भी आय के साधन विकसित किए जा सकते हैं। प्रत्येक देशवासी को पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।



शिक्षा का बदलता स्वरूप



श्री सतीश कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

मानव के क्रमिक विकास के साथ ही समाज की व्यवस्थाओं के रूप में शनैः शनैः परिवर्तन होता गया। सामाजिक ताना-बाना, दैनिक दिनचर्या, भोजन, रीति रिवाज, परम्पराएँ, उत्सवों को मनाने का तरीका, शिक्षा का स्वरूप इत्यादि में कालगति के साथ बदलाव होने लगा।

आदिकाल से लेकर तकनीकी की इस 21वीं सदी तक शिक्षा का स्वरूप सतत बदलता ही रहा है। 'शिक्षा' शब्द की व्युत्पत्ति मूलतः संस्कृत के 'शिक्ष' धातु से हुई है जिसका अर्थ है ज्ञान/विद्या प्राप्त करना। 'शिक्षा' शब्द का वर्तमान अर्थ इसके मूल अर्थ से बिलकुल परे है। भाषा के विकास के शुरूआती दौर में 'शिक्षा' का अर्थ सिर्फ अनौपचारिक शिक्षा से था यथा शिकार करना सीखना, पाक कला सीखना इसे ही 'शिक्षा' के तौर पर समझा जाता था। समाज के क्रमिक विकास और बदलते ताने-बाने के फलस्वरूप वर्तमान में 'शिक्षा' शब्द का अर्थ और उद्देश्य सिर्फ प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण करने तक ही सीमित रह गया है। इस शब्द के व्यापक अर्थ के रूप में औपचारिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा और अन्य कौशल सीखने से लिया जाना चाहिए।

शिक्षा का स्वरूप आदिकाल से समय के साथ बदलता ही जा रहा है। प्राचीन समय में सिर्फ रोजमर्रा के कार्य सीख लेना ही शिक्षा समझा जाता था। आश्रमों में आरम्भ हुई गुरु-शिष्य परम्परा के अंतर्गत 'शिक्षा' सिर्फ शास्त्रों को सीख लेना और विभिन्न तरह के युद्ध विधाएँ सिखने तक सीमित थी। शिक्षा के क्षेत्र भी सीमित होते थे। इस परम्परा के अंतर्गत गुरु द्वारा बताये हुए श्लोक/ज्ञान को शिष्य बार-बार दोहराकर सीखते थे।



भारत में 19वीं सदी के आरम्भ से ही अंग्रेजों ने यहाँ अंग्रेजी पद्धति पर जोर दिया। मैकाले ने विभिन्न जगहों पर भारतीयों के लिए स्कूल शिक्षा प्रणाली का प्रयोग करते हुए अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा की व्यवस्था पर बल दिया। यही स्वरूप भारत में प्रचलन में है। इस प्रणाली में विभिन्न तरह के बदलाव होते गए तथा नित नए पाठ्यक्रम उपलब्ध कराए गए।

कोरोना काल में शिक्षा के स्वरूप में बहुत ज्यादा बदलाव देखने को मिले। दूर-दराज के विद्यार्थियों और शिक्षकों ने मिलकर विभिन्न ई-प्लेटफार्म के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को अपनाने का भरसक प्रयास किया जो काफी हद तक सफल भी रहा। आपदा में अवसर की बात यहाँ साबित हो रही है की जहाँ एक तरफ कोरोना काल मानव जाति के अस्तित्व के लिए खतरा था वहीं दूसरी तरफ इसके दौरान शिक्षा क्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न नए आयाम देखने को मिले।

भारत जैसे विकासशील देश में काफी लम्बे समय से चली आ रही शिक्षा प्रणाली में सुधारों की आवश्यकता को देखते हुए ही मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नयी शिक्षा पद्धति NEP-2020 को लांच किया गया। नई शिक्षा पद्धति के अंतर्गत प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश की उम्र तथा शिक्षा के माध्यम में बहुत बदलाव किए गए हैं। इस पद्धति के अंतर्गत विद्यालयी शिक्षा एवं विश्विद्यालय स्तर तक के पाठ्यक्रमों को अलग-अलग माध्यमों यथा मात्र भाषा, हिंदी, अंग्रेजी में उपलब्ध कराने का संकल्प लिया गया है। यह कल्पना की जा सकती है की सम्पूर्ण विश्व में आने वाली सदियों में शिक्षा का स्वरूप किस तरह बदलेगा ?

यह कहना उचित ही होगा की शिक्षा का ऐसा माध्यम विकसित किया जाएगा जिससे रिमोट क्षेत्रों में बैठे छात्र/छात्राएं भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा आसानी से सुलभ हो सकेगी। मानव इतिहास को देखें तो यह प्रतीत होता है की हर तरह के बदलावों के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव होते हैं। आशा करते हैं की इसी तरह शिक्षा प्रणालियों में सुधारात्मक बदलाव होंगे जो मानव जाति के विकास में सहायक सिद्ध होंगे।



हिमालय की गोद में



श्री मनीष शर्मा

सहायक लेखा अधिकारी

मैंने अपनी पत्नी के साथ फरवरी 2019 में कश्मीर यात्रा की, जो मेरे जीवन का अद्वितीय अनुभव था। यह यात्रा पाँच दिनों की थी, जो कुछ घटनाओं के कारण छः दिनों की बन गई। कश्मीर भारत का प्राकृतिक सुंदरता से भरा राज्य है, जहां बर्फबारी के साथ मनोहारी पहाड़ियों के दृश्य अद्भुत होते हैं।

हमारी यात्रा राजकोट से श्रीनगर तक की थी जिसे हमने बस एवं हवाई जहाज द्वारा पूर्ण की। बादलों के बीच से हिमालय पर्वत की बर्फ से ढँकी चोटियों के नजारे बहुत सुंदर थे। हमारा पहला स्थान श्रीनगर था, जो उस समय के राज्य जम्मू-कश्मीर की राजधानी था। यहाँ पहुँचकर हमने डल झील के मनमोहक नजारों को करीब से देखने के लिए पानी के ऊपर तैरती एक हाउस बोट में रहना निश्चित किया। सबसे पहले हमने शंकराचार्य मंदिर से आशीर्वाद प्राप्त किया। यह मंदिर श्रीनगर शहर से 1000 फीट की ऊंचाई पर है। हमने चश्मेशाही बाग, निशात बाग और मुगल बाग जैसे बगीचों की भी सैर की और उनकी खूबसूरती का आनंद लिया। इन बगीचों में चिनार ओर सप्रू के बहुत सुंदर पेड़ हैं जो बहुत ही मनभावन लगते हैं।

अगला स्थान जो हमारी यात्रा का हिस्सा बना वह था, पहलगाम। यहाँ हमने बैताब घाटी और खिलौने वाली झील जैसे स्थान देखे। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता ने हमें मंत्रमुग्ध कर दिया। पहलगाम पवित्र अमरनाथ यात्रा का प्रारम्भिक बिन्दु है। पहलगाम में हमने प्रकृति के साथ अपने कुछ बहुत सुंदर फोटो यादों के स्वरूप बनवाए। हमने यहाँ प्राचीन अवन्तीपुरा मंदिरों के भी दर्शन किए जोकि प्राचीन भारतीय कलाकृति का अभीष्ट उदाहरण है।

इसके बाद हम अगले दिन सोनमर्ग गए, जहां हमने खच्चरों की सवारी करके विश्रसर झील, कृष्णसार झील और गदसर झील देखी। यहाँ का पूरा मार्ग बर्फ से ढका हुआ था। हमने यहाँ सिंध नदी का भी नजारा देखा जो की अत्यंत मनोहारी था। थाजवास झील भी एक प्रमुख झील है परन्तु वहाँ केवल गर्मियों की ऋतु में ही जा सकते हैं अतः हम उसे नहीं देख सके। सोनमार्ग में बर्फ के साथ खेलकर हमें बहुत आनंद आया।

यात्रा का अगला पड़ाव था गुलमर्ग, यह स्थान एक शिखरी इलाका है। गुलमर्ग तक पहुँचने के लिए हमने टंगमर्ग से एक विशेष वाहन लिया क्योंकि गुलमर्ग तक जाने का मार्ग बर्फ से भरा एवं अत्यंत दुष्कर था। यहाँ हमने गोंडोला के माध्यम से ऊंचाई से गुलमर्ग के सौन्दर्य को निहारा तथा हमने बर्फ से ढके हुए पहाड़ों का नज़ारा देखा। गुलमर्ग गोंडोला, दुनिया की सबसे ऊँचे गोंडोला में से एक है जिसमें हमने गुलमर्ग से कोंडेरी तक यात्रा की। गुलमर्ग में हमने स्कीइंग एवं स्नोबाइकिंग जैसे रोमांचक खेलों का लुप्त उठाया। यहाँ बर्फ के मध्य में हमने कश्मीरी कहवे का आनंद लिया जो कि कश्मीर का एक प्रमुख पेय है।

यात्रा के अंतिम दिन हमने डल झील पर शिकारा राइड के साथ पानी पर तैरता बाज़ार देखा। यह एक अलग ही अनुभव था जिसे हमने बहुत आनंद से जिया। इस बाज़ार से हमने कुछ सूखे मेवे खरीदे जो कि कश्मीर के विश्वप्रसिद्ध सूखे मेवे हैं। साथ ही हमने कुछ अन्य सामान भी खरीदा। यहाँ से हम वापस हवाई अड्डा चले गए।

हवाई-अड्डा पहुँच कर हमारे साथ एक अत्यंत भयावह घटना घटित हुई जिसने हमें भयभीत कर दिया। हवाई-अड्डा पहुँचने पर हमें पता चला कि हमारी फ्लाइट सुरक्षा कारणों की वजह से रद्द कर दी गयी है। हमें अचानक यह लगा कि शायद भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध या तनाव की स्थिति बन गई होगी, जिसके कारण यात्रा से अधिक सुरक्षा को प्राथमिकता दी जा रही है। हमें यह जानकारी थी कि हमारी यात्रा पुलवामा हमले के तुरंत बाद की यात्रा है, तो दोनों देशों के बीच तनाव स्वाभाविक था। मैंने तत्परता से हवाई-अड्डे के काउंटर पर संपर्क किया एवं अगले दिन सुबह की फ्लाइट निश्चित करवा ली। परंतु अब इस अजनबी शहर में फँसने पर हम बहुत भयभीत थे। सौभाग्यवश हमें हमारी ही तरह का एक और पति-पत्नी का जोड़ा मिला जिनके साथ मिलकर हमने पास ही के एक होटल तक की टैक्सी यात्रा साथ की। वो पूरी रात हमारी डर एवं चिंता में ही निकल गई। अगले दिन सुबह हम फ्लाइट से सुरक्षित घर को लौट आए।

इस प्रकार हमारी ये कश्मीर यात्रा आनंद, डर एवं रोमांच का सम्मिश्रण रही। इस पूरी यात्रा में भारतीय सीमा सुरक्षा बल के सैनिक हमारी सुरक्षा में सब जगह तत्पर थे, जिन्होंने हमें सुरक्षा का एहसास करवाया। यह यात्रा हमारे जीवन के अविस्मरणीय एवं अनमोल यात्रा प्रसंगों में से एक है।



गौ आधारित खेती



श्री राकेश कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

भारत वर्ष में खेती प्राचीन काल से हो रही है। सम्पूर्ण दुनियाकी भूख को शांत करने का काम किसान करता है। किसान न केवल मानव समुदाय को अपितु प्रकृति के सभी पशु-पक्षी, कीट-पतंगों और सूक्ष्म जीवाणुओं को अपनी कृषि के माध्यम से भोजन प्रदान करता है।

एक समय में देश में खाद्यान्नोंकी कमी थी, इसलियेसाठ के दशक के मध्य में हरित क्रांति हेतु भरसकप्रयास किए गए तथा उसमें सफलता भी मिली। इसके अंतर्गत गेहूं और धान की बौनी किस्में ईजाद की गई। इन उन्नत किस्मों में रासायनिक खाद का प्रयोग अंधाधुंध होने लगा, परिणामस्वरूप, जमीन की उर्वरा शक्ति क्षीण होती गई। इसके साथ ही फसलों में बिमारियों और कीटों का आक्रमण बढ़ने लगाजिसके फलस्वरूप, रासायनिक दवाइयों का इस्तेमाल अत्यधिक होने लगा। भूमि, पानी और वातावरण के प्रदूषित करने में इन सबका अहम योगदान रहा। रासायनिक खाद और दवाइयों के कारण भूमि में विद्यमान सूक्ष्मजीव, केंचुएँ इत्यादि की क्रियाशीलता एवं गतिविधि कम होती चली गई। इसका दुष्प्रभाव यह हुआ की भूमि का भौतिक, रासायनिक और जैविक संतुलन बिगड़ गया।

रासायनिक खेती के भ्रम जाल ने किसान की बुद्धि फिरा दी है (सोचने की शक्ति खत्म हो गई) और वह अधिक उत्पादन के लालच में फंसने लगा। किसानों ने अधिक उपज के लिए रासायनिक जहर और संकर बीजों का उपयोग अधिक से अधिक शुरू कर दिया है इससे सबको दूषित भोजन मिल रहा है तथा इसके परिणामस्वरूप, मानव पशु और पक्षियों में नित्य नई और अनेक तरह की बीमारियाँ देखने को मिल रही है। वर्तमान परिदृश्यमें शुद्ध अनाज और सब्जियां मिलना दुर्लभ हो गया है।



वर्तमान में प्रकृति का दोहन इस स्तर पर पहुँच गया है कि मनुष्य के अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगा है। जमीन, पानी, वायु आदि हर प्रकार की प्रकृति प्रदत्त व्यवस्थाओं में प्रदूषण व्याप्त है। पृथ्वी के स्वास्थ्य में इतनी विकृति आ गई है कि इसमें पैदा होने वाली वनस्पति व अन्न अत्यंत जहरीले हो गए हैं। धरती का स्वास्थ्य गौ-संरक्षण के साथ प्रत्यक्ष रूप से और गहराई से जुड़ा हुआ है। गौ आधारित खेती अपनाकर, किसान बिना रासायनिक खाद यथा यूरिया, डीएपी और कीटनाशक डाले बेहतर उपज ले सकता है। इस पद्धति में पौधों के स्वास्थ्य के साथ-साथ भूमि के स्वास्थ्य पर भी ध्यान दिया जाता है।

गौ आधारित खेती को रसायनमुक्त खेती के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इस पद्धति में पंचगव्य का उपयोग करके कृषि संबंधी उत्पाद तैयार किए जाते हैं। इसमें मल्टिंग, गाय के गोबर के उपयोग और गौ-मूत्र से मिश्रण तैयार करने पर जोर दिया जाता है। इस पद्धति के अंतर्गत मिट्टी की उर्वरता, पर्यावरणीय स्वास्थ्य की बहाली और ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन का शमन होता है। इस पद्धति के अंतर्गत मृदा और पौधों से वातावरण में कार्बन उत्सर्जन करने की बजाय इसका अवशोषण करने की क्षमता होती है। इस खेती द्वारा ही बड़े पैमाने पर खेत में ही बायोमास रिसाइक्लिंग की जा सकती है।

यह खेती इतनी उपयोगी है कि इससे जमीन की उर्वरता शक्ति बचेगी, जल की खपत ७० फीसदी कम होगी, गौ माता बचेगी, पर्यावरण बचेगा और किसान साहूकारों के दुश्चक्र में फंसने से भी बचेगा। गौ आधारित खेती से तैयार फसल कम लागत के साथ मूल्यवान, शुद्ध और गुणकारी होती है। इस पद्धति में पंचगव्य द्वारा फसलों के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्वों की आपूर्ति हो जाती है। इसमें किसान को, बाज़ारीकरण के इस महंगे दौर में खेती के लिए कुछ भी बाज़ार से खरीदने की आवश्यकता नहीं होती है। गौ माता के पंचगव्य (घी, दूध, छाछ, गोबर, गौ-मूत्र) का प्रयोग करके फसलों की अच्छी पैदावार ली जा सकती है। ये पंचगव्य कीट व बीमारी नियन्त्रण के साथ-साथ फसल को वृद्धि और पोषण प्रदान करने में सहायक है।

प्रकृति के जीवन क्रम में जो भी परिवर्तन होता है वह जीवाणुओं के कारण होता है। जीवाणु ही बीजों को उगाते, बढ़ाते और सभी तरह का पोषण भी प्रदान करने के अलावा फसलों की सुरक्षा भी करते हैं। इसलिए कृषि भूमि में समस्त प्रकार के जीवाणुओं का होना आवश्यक है। मशीनों से खेत को जोतने से तथा रसायन डालकर लगातार फसल लेने से भूमि मृतप्राय सी हो गई है। जिस मिट्टी में जीवाणु होते हैं वहां फसल बहुत बढ़िया होती है। पौधे स्वस्थ रहते हैं तथा उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता तुलनात्मक रूप से बेहतर होती है।

अत्यधिक रसायनों के प्रयोग से खेती में सहायक अनेक कीट मित्र मर जाते हैं। कीट नियन्त्रण का यह काम प्रकृति का है। प्रकृति ने ऐसे जीवों का निर्माण किया है जोकि फसलों के लिए नुकसानदायक जीवों को भोजन के रूप में ग्रहण कर लेते हैं। आधुनिक खेती पद्धति ने इस व्यवस्था को नुकसान पहुँचाया है। किसान के सबसे बड़े मित्र केंचुए को भी आधुनिक खेती पद्धति से भी नुकसान हुआ है। यूरिया एवं डीएपी के प्रभाव से केंचुआ जमीन की सतह से बीस फीट से भी अधिक नीचे चला गया है।

गौ आधारित खेती में पंचगव्य की गंध से केंचुएँ जमीन की सतह पर आकर अपना कार्य शुरू करते हैं। यही कृषि का असली विज्ञान है जिसे हम वर्तमान कृषि पद्धति से नष्ट कर चुके हैं। केंचुएँ द्वारा किए गए छिद्रों से बारिश का पानी सीधा पौधों की जड़ों तक पहुँचता है।

भारतीय देशी नस्ल की गाय के एक ग्राम गोबर में ३०० से ५०० करोड़ जीवाणु पाए जाते हैं जबकि जर्सी, हास्टन फिजीयन जैसी विदेशी नस्ल की गायों में यह गुणवत्ता बहुत कम होती है। गौ आधारित खेती में जीवामृत का बहुत महत्व है। देशी गौवंश के गोबर गौमूत्र से



जीवामृत, घनजीवामृत और जामन बिजामृत बनाया जाता है जिसका प्रयोग भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए किया जाता है। भूमि की उर्वरा शक्ति को बचाए रखने के लिए फसल चक्र, हरी खाद, कम्पोस्ट खाद इत्यादि का उपयोग किया जाता है।



भूमि की उर्वरा शक्ति आर्गेनिक कार्बन पर निर्भर करती है। साठ के दशक तक कृषि भूमि में ऑर्गेनिक कार्बन की औसत मात्रा २.५ प्रतिशत थी जो आज घटकर ०.९ प्रतिशत रह गयी है। इसकी मात्रा ०.५ प्रतिशत से कम होने पर भूमि बंजर हो जाती है। रासायनिक खाद और कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग फसलों को जहरीला बनाते हैं। इसी के परिणामस्वरूप, कैंसर जैसे गंभीर रोग के मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही है।

गौ आधारित कृषि पद्धति के लाभ :-

- खेतों की मिट्टी की गुणवत्ता, उर्वरकता और जलधारण क्षमता में बढ़ोतरी होती है।
- कृषि क्रियाकलापों में कम लागत के कारण किसानों की आय बढ़ती है, जिससे, सामाजिक और आर्थिक लाभ भी होता है।
- खाद्य सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन पर इसका सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है।
- इससे प्राकृतिक व्यवस्था सुदृढ़ होती है।
- इस पद्धति से खेती करने से भूमि मुलायम हो जाती है और लम्बे समय तक उपजाऊ बनी रहती है।

गौ आधारित खेती के संचालन के चार चक्र :-

- ♦ किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर, गौमूत्र तथा अन्य स्थानीय सामग्रियों से तैयार जीवामृत के उपयोग से भूमि में सूक्ष्म जीवों की संख्या में बढ़ोतरी करके और स्थानीय केंचुओं के संख्या और गतिविधियों को सर्वश्रेष्ठ स्तर तक बढ़ाकर जमीन में पहले से अनुपलब्ध आवश्यक पोषिक तत्वों की पोथों को उपलब्ध करवाया जाता है। यह फसलों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ता है तथा भूमि में जैविक कार्बन की मात्रा भी बढ़ाता है।
- ♦ बीजामृत का प्रयोग बीजों और पौधे की जड़ों पर सूक्ष्म लेप करके किया जाता है। इससे पौधों को उगने में तथा वृद्धि करने में आसानी होती है। इस बीजामृत का निर्माण पंचगव्य और बुझे हुए चुने को एक विशेष मात्रा में मिलाने से होता है।
- ♦ आच्छादन क्रिया के अंतर्गत भूमि में उपलब्ध नमी को सुरक्षित रखने के लिए इसकी उपरी सतह को किसी अन्य फसल के अवशेष से ढक दिया जाता है। इस प्रक्रिया से ह्यूमस की वृद्धि, भूमि की उपरी सतह का संरक्षण, भूमि में जल धारण की क्षमता में वृद्धि होती है।
- ♦ “वापसा” क्रिया जिसका शाब्दिक अर्थ है भूमि में वायु का प्रवाह। जीवामृत के प्रयोग तथा आच्छादन करने से भूमि की संरचना में सुधार होकर त्वरित गति से हाम्युश का निर्माण होता है। इससे अंततः भूमि में अच्छे जल प्रबंधन के प्रक्रिया आरम्भ होती है। फसल न तो अधिक वर्षा/तूफान में गिरती है और न ही सूखे की स्थिति में डगमगाती है।

अतः भविष्य की वायुमंडल की संभावित विषम परिस्थितियों से कृषि को बचाकर आगे ले जाना है तो हमें गौ आधारित खेती को अपनाना होगा। खेती की इस कृषि पद्धति को अपना ने से ही 'वसुधैवकुटुम्बकम्' की भावना साकार हो सकती है तथा विश्व का कल्याण सम्भव है।



भारत विश्व का मार्गदर्शक



श्री सुमित झा
लेखाकार

भारत 'विश्व का मार्गदर्शक' का अर्थ है- **"India the Guiding Light of the World."** भारत एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्र है जो विश्व में अपने समृद्ध संस्कृति, ऐतिहासिक विरासत और विभिन्न धर्मों के साथ अजेय स्थान रखता है। इसे 'विश्वगुरु' और 'मानवता का संचेतना' केंद्र माना जाता है। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण कारण भारतीय धरोहर है, जिसमें वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता आदि शामिल हैं। इन धरोहरों के माध्यम से भारत ने संस्कृति, नैतिकता और विज्ञान के क्षेत्र में विश्व को मार्गदर्शन किया है।

भारतीय दर्शनशास्त्र, जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन और सिख धरोहर विश्व के लिए अनमोल समृद्धि हैं, जो विभिन्न संस्कृतियों और जीवनशैलियों के बीच समानता और एकता का संदेश देते हैं। विभिन्न राज्यों की भिन्न भिन्न परम्पराओं के साथ रहने वाले भारतीय एक-दूसरे के साथ भाईचारे और प्यार से रहकर विश्व को संदेश देते हैं। भारत धर्मविश्वासों का एक संगम स्थल है, जो धार्मिक विविधता के बावजूद एक साथ रहता है। हिन्दू, इस्लाम, सिख, बौद्ध एवं जैन धर्मों और अन्य धर्मों के अनुयायी यहाँ आते हैं। इससे भारत विश्व को धार्मिक समझदारी, समानता और सहिष्णुता की मिसाल प्रस्तुत करता है।

भारत आध्यात्मिकता का एक विश्वस्तरीय केंद्र है, जहाँ ध्यान, धार्मिक अध्ययन और मनन की परंपरा हैं। भारत के ऋषियों और संतों के उपदेश ने विश्व को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया है। यहाँ कई धार्मिक और ध्यान प्रथाएँ जैसे योग, विपश्यना, ध्यान, भजन आदि विकसित हुईं। योग, ध्यान और प्राचीन चिकित्सा-विज्ञान भारतीय राष्ट्र के लिए मार्गदर्शक हैं और वे आज भी विश्व भर में लोगों को स्वस्थ और समृद्ध जीवन जीने का रास्ता दिखाते हैं।



भारत ने विज्ञान और गणित में भी विश्व को अपना योगदान दिया है। वैदिक गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष और खगोलशास्त्र भारतीय गणितीय ज्ञान के उदाहरण हैं। आधुनिक समय में भी भारत वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के माध्यम से विश्व बाजार में अपनी पहचान बना रहा है। भारतीय विद्या परंपरा ने विश्व को संपूर्णता के मार्ग पर चलने का संदेश दिया है।

भारत एक शांतिप्रिय राष्ट्र है जो आपसी सहयोग, समझदारी, और विश्वभाव को प्रोत्साहित करता है। भारत के संत और महात्मा गांधी जैसे विख्यात व्यक्तियों ने अहिंसा और सामंजस्यपूर्ण समस्या का समाधान करने के लिए अपने समर्थन और प्रयास के माध्यम से विश्वभर में शांतिप्रियता की भावना को प्रचारित किया है। भारतीय संस्कृति में सहयोग, समझदारी और सामंजस्यपूर्ण समस्याओं का समाधान करने की प्रेरणा मिलती है। भारत विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में सक्रिय भूमिका निभाता है और विश्वभर में शांति और सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है।

भारत एक समृद्ध और जीवंतता का एक प्रकाश बनकर चमकता है, जो विश्व को प्रेरित करता है। भारत की संस्कृति, भाषा और तपस्या ने विश्व को एक साथ जोड़ा है और उसे सामंजस्यपूर्ण विकास की दिशा में प्रेरित किया है। इसलिए, भारत को 'विश्व का मार्गदर्शक' या 'विश्व का नेतृत्व करने वाला देश' कहना सामान्य रूप से सही होगा। यह देश अपनी संस्कृति, धर्म, ज्ञान और विज्ञान के माध्यम से बड़ी संख्या में लोगों को प्रेरित करता है और उन्हें अपने जीवन को सबल और उदार बनाने के लिए प्रेरित करता है। भारत विश्व के लिए सच्चा मार्गदर्शक है जो सदैव मानवता के हित में समर्थ रहेगा।



कार्यालय यात्रा



सुश्री राजश्री के शाह
पर्यवेक्षक

प्रवेश से पेन्शन तक की सुखद यात्रा।

जी, हाँ! आप सबने सही सोचा, मैं मेरी कार्यालयीन सेवा की यात्रा की बात लिख रही हूँ। अन्य यात्रा की तरह इस लंबे सफर में भी बहुत सारे उतार-चढ़ाव और मुश्किलें थीं मगर कार्यालय की सखियों एवं सहकर्मचारियों के सहयोग से यात्रा सुखद रही।

तो पहले दिन से शुरु करती हूँ, दिनांक 17.07.1984 को हमारा एक बैच के रूप में कार्यालय महालेखाकार राजकोट में प्रवेश हुआ। प्रशासन की कार्रवाई पूर्ण होने के पश्चात मुझे निधि-16 अनुभाग में तैनात किया गया। मुझे वहाँ के सहकर्मचारी ने काम सिखाया और मेरी यात्रा शुरु। बाद में तीन महीने का कार्यालय प्रशिक्षण भी हुआ जिसमें हमें पंजीकरण(रजिस्ट्री) से लेकर वेतन एवं लेखा कार्यालय (पीएओ) तक में कैसे काम करना है उसकी जानकारी मिली। हमने हमारे पूरे सेवाकाल में रजिस्ट्री, प्रेषण(डिस्पेच), सामान्य कार्यालय प्रबंधन (जीओएम), डीसी, निधि अनुभागों में काम किया, मगर लगभग 32 वर्ष निधि अनुभाग में काम किया और निधि से ही सेवानिवृत्त होंगे। मैं 2005 से हमारी कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका 'गिरनार' में अपनी रचनाओं के रूप में योगदान दे रही हूँ।

हमें कार्यालय से मन की शांति, तन की तंदुरुस्ती और धन की प्राप्ति हुई है। हमारा कार्यालय सफर आसान करने में हमारी सखियों का बड़ा योगदान रहा। दिल से मिलने वाली खुशी का पासवर्ड 'दोस्ती' है। कहते हैं कि जिसके पास अच्छे दोस्त हों उसे बायपास सर्जरी (दिल की बीमारी) करवाने की आवश्यकता कम होती है।



हमारा यहाँ का कैन्टीन टेबल आज के टी-पोस्ट से भी बढ़कर है। गुप की सभी सखियाँ मिलती हैं, हँसी-खुशी की बातें होती हैं, किसी सखी के उपदेश या सुझाव से मुश्किलों के हल भी निकल आते हैं। कभी कार्यालय के काम में कोई समस्या हो, तो उसके लिए भी मार्गदर्शन मिल जाता है। हम एक दूसरे को कभी दुखी नहीं होने देते हैं। कभी हम हमारी तकलीफ बताते थे तो कभी सखियाँ हमारी आँखें पढ़ लेती थीं और एक दूसरे के दुःख का कारण जानकर उसे दूर करने में मदद करते हैं। आर्थिक मदद की जरूरत हो या परिवार में कोई बीमार हो तो हमेशा हाजिर हो जाते हैं। हमारा गुप सखियों का है तो जाहिर है कोई सखी शादी, तबादले के कारण हमसे दूर हो गई है; कार्यालयीन यात्रा के सफर में कई सखियों यात्रियों के रूप में मिलती-बिछड़ती रहती हैं, मगर सब हमारी यादों में बसती हैं। यादों का मेला लगते ही सभी हाजिर हो जाती हैं। हम सब हर बार यही कहते हैं कि हमने पिछले जन्म में कोई पुण्य किए होंगे कि हमें राजकोट ए.जी. जैसा कार्यालय मिला है। राजकोट के दूसरे कार्यालय वाले कभी-कभी हमसे ईर्ष्या भी करते हैं। राजकोट कार्यालय में अगर किसी का तबादला होता है या नवनियुक्त आते हैं तो जल्दी ही घुलमिल जाते हैं क्योंकि यह हमारा ए. जी. स्टाफ नहीं वरन् एक परिवार है। कई तो गुजराती न होने के बावजूद अच्छी गुजराती भी बोल लेते हैं।

एक बार मैंने अखबार में पढ़ा था कि आजकल एक ऐसा पुस्तकालय खुला है कि आपको वहां जाकर एक व्यक्ति बुक करना है जो एक घंटा आपकी बात सुनेगा। वैसे ये एक तरह का अच्छा प्रयास है, पर मेरा मानना है कि सबके पास घनिष्ठ मित्र होना चाहिए जो आपके व्यक्तिगत जीवन से वाकिफ हो और आपको किसी भी प्रकार की मदद चाहिए तो उससे मिल जाए। हम इस मामले में नसीब वाले हैं कि हमें कार्यालय में ही ऐसी सखियाँ मिल गयी हैं। आजकल अच्छे, सच्चे और ईमानदार दोस्त मिलना मुश्किल है। किसी को दूसरों की बात सुनने की फुर्सत नहीं है इसीलिए मानव पुस्तकालय खोलने की नौबत तक आ गयी है।

हमारे कार्यालय की सभी सखियाँ किसी न किसी कला में माहिर हैं। कोई नृत्य में, कोई चित्रकला में, कोई लेखन कला में, कोई नाट्य कला में तो कोई योग कला में। इन सबकी कलाओं का लुत्फ हम हिंदी पखवाड़ा के भव्य समापन समारोह के दौरान उठाते हैं।

अब मैं इस कार्यालय से 31-10-2023 को सेवानिवृत्त हो रही हूँ तो इन सबको बहुत याद करूँगी। कार्यालयीन यात्रा के सुखद अनुभवों को अपनी यादों के सफर में हमेशा संजोकर रखूँगी। यदि मेरी ओर से कभी कोई गलती हुई हो या किसी का मन दुखा हो तो सबको मेरी तरफ से “मिच्छामी दुक्दम” (मुझे माफ़ी दे दीजिए)।



जिंदगी



श्री राहुल कुमार
लेखाकार

जिंदगी जीने का नाम है। पर यह उतना आसान नहीं है जितनी आसानी से यह बोला और समझा जाता है। हमारे जिंदगी में हर दिन एक नई सुबह होती है जो अपने साथ नई खुशियाँ और उत्साह के साथ-साथ चुनौतियाँ भी लाती है। परंतु जीवनरूपी इस यात्रा में हम मनुष्य इन खुशियों को कैसे संजोते हैं तथा चुनौतियाँ का कैसे सामना करते हैं ये हमारी मानसिकता पर बहुत हद तक निर्भर करता है। जिंदगी के सफर में नित नई बाधाएं आयेंगी जो हमारी खुशियों में अवरोध बन जाती है परंतु ये सब मुसीबतें क्षणिक होती है यह हमारे आत्मबल एवं सकारात्मक सोच पर निर्भर है कि हम इन बाधाओं को कैसे देखते हैं।

दरअसल यदि हम जीवन के गूढ़को समझे तो हमको यह मालूम पड़ता है कि जिंदगी जीने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है हमारा स्वाभाविक रूप से खुश रहना और हम खुश तभी रह सकते हैं जब हम मानसिक रूप से स्वस्थ एवं स्वतंत्र हों। खुशियाँ कोई वस्तु या प्रकृति प्रदत्त चीज नहीं है जो हम खरीद कर ले सकते हैं। यह हमें हमारे स्वाभाविक कर्मों एवं संतुष्ट विचारों से मिलती है। इसके लिए हमें सकारात्मक सोच के साथ-साथ सच्चाई एवं विश्वासी बन कर भौतिकवादी जीवनशैली एवं जीवन की मौलिकता के बीच सामंजस्य बना कर रखना पड़ता है।

विज्ञान के इस युग में टेक्नोलोजी का विस्तार जिस रफ्तार से हमारी जीवनशैली को हार्ड एंड फास्ट करता



जा रहा है उससे तो मानो लगता है कि हम जिंदगी नहीं जी रहे हों बल्कि कोई टाइम मशीन में सफर कर रहे हैं। आज हम घर बैठे ही दुनिया के किसी भी कोने में सोशल मीडिया के माध्यम से चाहे वह फेसबुक हो या इन्स्टाग्राम पर लोगों तक बहुत आसानी से पहुँच सकते हैं। परंतु इन सभी माध्यमों से जुड़ाव के बावजूद भी आज विश्व में लोग पहले के मुकाबले अधिक मानसिक अवसाद के शिकार हो रहे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है लोग जिंदगी की मौलिकता एवं समाजिकता से दूर होते जा रहे हैं और लोगों में एक दूसरे को जानने समझने की बजाय एक दूसरे से आगे निकलने की प्रतिस्पर्धा लगी हुई है। लोगों को जानने वालों की संख्या लगातार हजारों लाखों में बढ़ रही है परंतु उनको समझने वालों की संख्या ना के बराबर होती है क्योंकि ऐसे लोग काल्पनिक एवं अपने बनाए क्षण भंगुर जिंदगी को जीने लगते हैं। जो जीवन की मौलिकता से काफी दूर पहुँच जाते हैं इसी का परिणाम है कि आज हर वर्ग के लोग मानसिक रोग जैसे रोगों से ग्रसित हो रहे हैं। जिसके कारण ही जीवन के ना जीने की चाहत अन्ततोगत्वासुसाइड का फैसला कर लेते हैं।

कहावत है जान है तो जहान है अर्थात जिंदगी जीने के लिए जान का होना जरूरी है जो हमें प्रकृति द्वारा हवा, धूप, जल, आदि रूपों में नित दिन मुफ्त मिलती है। इसके अलावा जो भी है वो हमारी मेहनत एवं सोच के ऊपर निर्भर करता है कि हम कैसे अपनी जिंदगी को सरल एवं आनंदमय बनाए। जिंदगी के हर मोड़ पर आपको चुनौतियों एवं संघर्षों का सामना करना पड़ता है परंतु जब आप इन चुनौतियों एवं संघर्षों को क्षणिक मानते हैं तो खुद को विश्वास दिलाए जाने की आवश्यकता क्या है? यही जिंदगी जो आपको कठिनाइयों से भरी मालूम पड़ती है वह सरल, सहज एवं खुशियों से भरी मिलेगी।

खूबसूरत सी प्रकृति में हर सजीव प्राणी में जीवन है परंतु हम मनुष्य कितने सौभाग्यशाली हैं जिनके पास सोचने तथा विवेक से निर्णय लेने की क्षमता है जिससे हम प्रकृति में व्याप्त हर वो चीज जिसका दोहन हम अपनी जिंदगी को बेहतर एवं खुशनुमा बनाने में कर सकते हैं। लेकिन हम अपने असंतुष्ट प्रवृत्ति के कारण जिन चीजों का इस्तेमाल हमें वैज्ञानिक एवं सहजता से करना चाहिए उन्हें अत्यधिक नकारात्मक एवं प्रकृति के प्रति उदासीन भाव से करके हम अपने जीवन को और मुश्किलों एवं जटिलताओं की ओर ले जा रहे हैं।

हमें जीवन की महता को समझने की जरूरत है। हर प्राणी को जीवन एक ही मिलता है। यह जिंदगी बहुत अनमोल एवं अकल्पनीय है यहाँ एक पल में जिंदगी मिलती है तो दूजे पल में जिंदगी थम सी जाती है। इस संदर्भ में कवि राधवेन्द्र सिंह लिखे हैं **...जीवन क्या है, क्या जीवन है बस इतना ही बखान करूँ।** जो समझ गया वो खेल गया जो ना समझा वो झेल गया, जीवन तो एक चौसर है सच्चे शब्दों में एक बात कहूँ जीवन तो एक अवसर है। अर्थात जीवन का जो अवसर हमें मिला है उसका भरपूर आनंद लेना चाहिए। सर्वप्रथम हमें खुद के जीवन को सरल एवं स्पष्ट रखना चाहिए तथा अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए जिससे कि हमारा जीवन सार्थक बने। यदि हमारा लक्ष्य लोकहितकारी एवं सार्वभौमिक हो तो हमारा जीवन सार्थक एवं खुशहाल होता है।

मुख्य रूप से हमारी जिंदगी में तीन पड़ाव आते हैं बचपन, जवानी तथा बुढ़ापा। हमारी जिंदगी इन तीनों पड़ावों से होकर अन्ततोगत्वा मृत्यु तक पहुँचती है, जो अटल है। पर यह जीवन जो अपने पहले पड़ाव बचपन से होकर अपने अंतिम पड़ाव बुढ़ापे तक पहुँचते-पहुँचते अपने पीछे यादों और अनुभवों का ऐसा अनमोल खजाना छोड़ जाता है जो शायद ही किन्हीं किताबों या ग्रंथों में मिलता है। जिंदगी तो ऐसा सफर है जो बस चलती जाती है यह एक अनुभूति है जिसका आनंद लेते हुए हमेशा सकारात्मक सोच के साथ नकारात्मकता को दूर करते हुए प्रेम एवं सौहार्द के साथ चलना होता है। उम्मीद पर कायम रहें क्योंकि जिंदगी में कुछ भी स्थायी नहीं है जो है जैसा है उसी में खुश रहना ही जिंदगी है।



आइए जीवन को सार्थक बनाएं



श्री योगेश पटेल
लेखाकार

हमारा मन अच्छी और बुरी कई धारणाओं से बंधा हुआ है। जिसके मन में बहुत ज्यादा विश्वास और अच्छी सोच होती है उसे कुछ अलग सा महसूस होता है जब कि कई बार जिसके लिए मन में कोई शिकवा होती है उसे लगता है कि उसका सम्मान किया जाता है।

लोग हमारी शालीनता को जबरदस्ती या अपने से कमतर समझते हैं, वे जिस ताने देने वाली भाषा का इस्तेमाल करते हैं, हम उसका जवाब नहीं देते, क्योंकि सीधे-साधे लोग वो भाषा नहीं जानते। मेरा भी एक प्रश्न है कि क्या इस समय में भी सीधे या सरल लोग हैं? हाँ, अभी भी है लेकिन विनम्रता नहीं देखी जाती क्योंकि पाखंडी व अहंकारी लोगों की संख्या अधिक है।

हम अपने जीवन और दूसरे के जीवन की बीच की दूरी को भूल गए हैं। हम हमेशा दूसरे के बारे में सोचते हैं कि दूसरे क्या कहेंगे। इसी तरह सामने वाला भी यह जानने को उत्सुक रहता है कि हमारी जिंदगी में क्या चल रहा है। किसी के सामने दूसरों को नीचा दिखाना मानो मनुष्य का लक्ष्य बन गया है। किसी को कहाँ और कैसे बुरा दिखाना ही जीवन का मुख्य उद्देश्य बन गया है। आइए, हम अपने अंदर झाँकें। दूसरों को कम दिखावे की आड़ में हम खुद को नीचे गिराते जा रहे हैं और इंसानियत को भूलते जा रहे हैं। हम दूसरे को नुकसान पहुंचाने के लिए किसी तीसरे व्यक्ति का उपयोग करते हैं, वह व्यक्ति भी हमारे विपक्ष में होता है, लेकिन जब उसे वास्तव में एहसास होता है कि वह क्या कर रहा है, तो वह खुद को जवाब नहीं दे पाता है।

हम कर्म की बात कर रहे हैं; अच्छे और बुरे कर्म के प्रति जागरूकता। क्या हम सचमुच अच्छे और बुरे कर्म के बीच अंतर समझते हैं? हम अपने वाणी और व्यवहार से दूसरों के दिलों को ठेस पहुंचाते हैं। ये हमारा कर्म है।

आइए, हम किसी से अपेक्षा न करके स्वयं को मजबूत करें, मन की सभी बातें भगवान को समर्पित करें। आइए, ऐसे कर्म पथ पर चलें, जीवन को कुछ सार्थक बनाएं।



शब्दों का ताना-बाना



सुश्री स्वाति कुमार
हिंदी अधिकारी

मानव जीवन में शब्दों का बड़ा महत्व है। हमारे देश में कई भाषाएँ एवं बोलियाँ बोली जाती हैं। सभी की अपनी-अपनी पहचान एवं संस्कृति हैं। किंतु संपर्क भाषा के रूप में, एकता की भाषा के रूप में हम हिंदी भाषा का ही प्रयोग करते हैं। किसी भी प्रांत का व्यक्ति दूसरे प्रांत के व्यक्ति के साथ हिंदी में ही बात करता है यदि दोनों को एक-दूसरे की भाषा/बोली न आती हो तो। हिंदी शब्दों के अन्य अर्थ भी बन जाते हैं तो कुछ शब्द उच्चारण सही न होने के कारण गलत हो जाते हैं। इसी प्रकार हर भाषा में कई शब्द सामान्यतः प्रयोग किए जाते हैं किंतु उसी शब्द को दूसरी भाषा में और ही अर्थ होते हैं जैसे मराठी में माँ को 'आई' कहते हैं पर हिंदी में आई 'आती हूँ' होता है, उसी तरह 'दादा' शब्द कई जगह पर बड़े भाई को भी कहते हैं। यदि किसी को भी दो या दो से अधिक भाषाएं आती होंगी तो हम पाएंगे कि हमारी भारतीय भाषाओं में भी हमें ऐसे कई शब्द मिल जाएंगे जिसमें शब्द और उसका उच्चारण तो एक ही है किंतु अर्थ अलग-अलग है। शब्दों के इसी मायाजाल के कारण कई गलतफहमियां बन जाती हैं वो कैसे आइए जानते हैं;

गौतम नामक व्यक्ति एक सरकारी कर्मचारी था। वह नई दिल्ली में सपरिवार अपने सरकारी आवास में रहता था, जहाँ भिन्न-भिन्न राज्य के लोग रहते थे। अलग-अलग प्रांत के होते हुए भी आपस में काफी भाई-चारे के साथ रहते थे। एक तरह से कहा जाए तो अनेकता में एकता की झलक मिलती थी। कोई भी त्योहार हो सभी अपने-अपने व्यंजन बनाते थे, एक दूसरे को बांटते थे। 15 अगस्त हो या 26 जनवरी, होली या ईद, नवरोज हो या बैसाखी, दिवाली हो या क्रिसमस हो एक खुशी का माहौल बन जाता था। गौतम जी सभी आयोजन संबंधी समिति के सचिव थे। खेलकूद हो, मनोरंजन संबंधी हो या कोई जल-पान की व्यवस्था आदि का भार उनके ही कंधों पर था। उनके कॉलोनी में बहुत बड़ा मनोरंजन क्लब तथा एक बड़ा ऑडिटोरियम भी था जहाँ पर वहाँ के कार्मिकों को छूट थी कि वे अपने निजी समारोह भी वहाँ कर सकते थे।



एक बार उनके पड़ोसी शिवरामन की बेटी की शादी थी। वे मद्रासी थे। उन्होंने गौतम जी से सारी व्यवस्था में सहायता करने की मांग की। गौतम जी ने आश्वासन दिया कि आप घबराइए नहीं, सभी कुछ कुशल-मंगल हो जाएगा। शादी में सब कुछ ठीक चल रहा था। तभी शोरगुल सुनाई दिया। गौतम जी ने जाकर देखा कि क्या हुआ। पता चला बाथरूम के बाहर लाइन लगी थी और वहाँ एक आदमी जोर-जोर से झगड़ रहा था। झगड़नेवाले शिवरामन के ही रिश्तेदार थे। पूछा गया कि क्या हुआ तो वे उंगली से इशारा करते हुए बोले “इस आदमी ने मुझ से पूछा कि मेरी पत्नी कौन सा स्नान कर रही है?” सभी सुनकर स्तब्ध रह गए कि ये कैसा प्रश्न हुआ। अब वो शक्स लड़के वालों की तरफ से थे, वे लड़के के पिताजी के मित्र थे जो कि हिंदी भाषी थे। फिर उस शक्स से पूछा गया कि “भाईसाहब आपने इनसे क्या कहा?” तो वे बोले “ये साहब बार-बार बाथरूम के बाहर चक्कर काट रहे थे, मुझे कुछ परेशान लगे, तो मैंने पूछा- भई क्या बात है? तो ये भड़क गए, मुझे घूरकर बोले-ऑयल बाथ। मैं उनकी बात समझा नहीं इसलिए मैंने फिर से पूछा तो मुझसे मद्रासी में लड़ने लगे, मैं तो

समझ भी नहीं पा रहा कि मैंने ऐसा क्या पूछ लिया।" फिर उनके रिश्तेदार से पूछा कि उन्होंने तो ऐसा कुछ बोला ही नहीं, तो आप क्यों भड़के? तो वे बोले "'क्या बाथ' का क्या मतलब, मेरी पत्नी नहा रही थी और ये साब पूछ रहे हैं कि मेरी पत्नी कौन सा स्नान कर रही है ???" तब जाकर सबको समझ आया कि मामला क्या है। उन्होंने 'बात' को अंग्रेजी शब्द का 'बाथ'(bath) समझ लिया क्योंकि उनको हिंदी नहीं आती थी इसलिए हिंदी के शब्द को अंग्रेजी का बाथ मान लिया और आगबगूला हो गए। फिर उन्हें समझाया गया कि असल बात क्या थी, तब जाकर उन्होंने माफी मांगी। यूँ हो जाता है शब्दों की गुथागुथी।



उसी कॉलोनी में रहते थे विवेकभाई, जो एक दिन कुछ घरेलू सामान लाने किराने की दुकान जा रहे थे कि रास्ते में एक आदमी जा रहा था जिसका रुमाल गिर गया। विवेकभाई ने उस आदमी को पुकारा "ओ! मोटा भाई" उस आदमी ने पीछे मुड़कर देखा, विवेकभाई ने फिर कहा "मोटा भाई आपका रुमाल...."। ये सुनकर उस आदमी का चेहरा लाल हो गया। एकदम से चिल्लाने लगा "बड़े बत्तमीज हो, किसी को कोई ऐसे पुकारता है क्या?" विवेकभाई को अजीब लगा, मन में सोचा कि मैंने कहाँ कुछ गलत कहा। अब वो आदमी लोगों को इकट्ठा करने लगा और बोलने लगा "देखो ये मुझे कैसे बोलता है, न जान न पहचान और इतनी बदत्तमीजी से बात करता है, मैं तो अपने रास्ते जा रहा था, तो ये मुझे चिढ़ा रहा है। मैं मोटा हूँ तो इसका मतलब ऐसा थोड़ी होता है कि ये मुझे चिढ़ाए! ये खुद ही ऐसा करेगा तो अपने बच्चों को क्या ही सीखाएगा!" धीरे-धीरे भीड़ जमने लग गई। विवेकभाई ने फिर विनम्रतापूर्वक कहा "देखिए भाईसाहब मेरा इरादा आपको ठेस पहुँचाने का नहीं था"। पर वो आदमी सुनने को ही तैयार नहीं हो रहा था फिर भड़ककर बोला "तो मोटा क्यों कहा"। तो विवेकभाई ने फिर हाथ जोड़कर कहा "हमारे गुजराती में 'मोटाभाई' आदर की भावना है यानी कि हम बड़े भाई को इज्जत से मोटाभाई कहते हैं"। तब भीड़ में से भी किसी ने उनकी बात का समर्थन किया तब जाकर मामला सुलझा।



इसी कॉलोनी के बाहर मुखर्जी बाबू रहते थे, वो भी सरकारी कर्मचारी थे, पर खुद के मकान पर रहते थे। एक दिन वे कार्यालय में काम कर रहे थे और फिर किसी काम से गौतम जी के चेंबर में उनसे मिलने गए फिर बोले "ओरे! बातों-बातों में मैं तो यह बोलना ही भूल गया कि कोल शाम को आप मेरे घोर पर भोजन के लिए आना, मैंने अन्य सभी साथियों को भी बुलाया है" गौतम ने कहा ठीक है। अगले दिन शाम को गौतम ने अपनी पत्नी से कहा कि मेरे लिए रात का खाना मत पकाना, मुखर्जी बाबू ने खाने का न्यौता दिया है। शाम को तैयार होकर गौतम और अन्य साथी मुखर्जी बाबू के घर गए। वहाँ 2 पंडित जी भी विराजमान थे और घर में हवन चल रहा था। मुखर्जी जी की पत्नी ने उनका खूब आदर सत्कार के साथ स्वागत किया। काफी देर हवन-पूजन के बाद पंडित जी सबको आशीर्वाद देकर चले गए। अब सभी मित्रगण बैठे रहे कि अब खाना परोसा जाएगा, सबके पेट में चूहे दौड़ने लगे थे सोच-सोचकर की आज तो स्वादिष्ट दावत का आनंद लिया जाएगा। किंतु यहाँ तो खाने की खूशबू तक नहीं आ रही थी। काफी देर इधर-उधर की बातें करने के बाद इन लोगों से रहा नहीं गया और गणेश महोदय ने ही बोलने का श्रीगणेश किया। पूछे-"मुखर्जी बाबू!, अब भोजन कब खिलाइगा?" तो बाबू बोले "भोजन तो हो गया ना!!" सभी आश्चर्य में पड़ गए, लगभग सभी एक साथ पूछ बैठे "भोजन कब हुआ?" मुखर्जी बाबू हँस कर बोले "ओरे! ओभी तक योही तो हुआ न!!" जस्बिंदर जी भड़क गए "ओए, क्या गलत कर रहा है तू बे, क्यों मजाक कर रहा है?" अब तक सभी को लगा कि बंगाली बाबू मजाक कर रहे हैं पर मामला वाकई गंभीर लगने लगा, सभी परेशान होने लगे। विवेक ने सभी को शांत रहने के लिए कहा फिर मसले को समझने की कोशिश की। तब सभी को समझ आया कि मुखर्जी बाबू 'भजन' को "भोजन" कह कर उच्चारण कर रहे थे। अब मुखर्जी बाबू को भी जब समझ आया तो उन्होंने सभी से माफी मांगी। सभी ने भी फिर कहा कि आपकी गलती नहीं है। फिर सभी बाहर खाना खाकर अपने-अपने घर चले गए।



सेवानिवृत्ति के कई वर्षों बाद जब सभी साथी इकट्ठा हुए तो इन्हीं सभी घटनाओं को याद करके, पुरानी यादें ताजा कर फिर से उस पल में पहुँच कर खूब हँसे। कई बार जीवन में रोचक घटनाएं घटती हैं और यादगार लम्हें बनकर रह जाती हैं। जिसे याद करके चेहरे पर मुस्कुराहट आ ही जाती है। तो आप भी सोचिए ऐसे शब्दों को और लाइए अपने चेहरे पर मुस्कुराहट।



किस्मत अपनी-अपनी



श्री बिजेन्द्र कुमार बेरवाल
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

कहते हैं कि हर इंसान अपनी किस्मत लिखवा कर लाता है। वो जिंदगी में क्या बनेगा? क्या करेगा? कहाँ पैदा होगा और कहाँ प्राण त्यागेगा आदि सारी बातें उसके जन्म से पहले ही उसके भगवान उसके भाग्य में लिख देते हैं और उसी के अनुसार व्यक्ति प्रभु द्वारा निर्धारित स्थान पर जन्म लेता है और अपना जीवन यापन करता है और समय आने पर इस संसार से अलविदा लेता है। यह भी कहा जाता कि सब कुछ वही होगा जो प्रभु ने रच दिया है। जिसे हम दूसरे शब्दों में विधि के विधान के नाम से भी जानते हैं। व्यक्ति प्रभु द्वारा निर्धारित जिंदगी ही जीता है, वह अपनी सारी जिंदगी अपने भाग्यनुसार जीकर बिता देता है। अब ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि हमारा भाग्य कैसा लिखा गया है? क्या अच्छा लिखा गया है या बुरा या मिला-जुला लिखा गया है। हमारे जीवन में उतार-चढ़ाव चलते रहते हैं, जब जिंदगी अच्छे से चलती है और जीवन आसान लगने लगता है, सभी इच्छाएं पूरी होती दिखती है, तो जीवन जीने में बड़ा मजा आता है और सभी कुछ अच्छा-अच्छा लगता है और लगता है कि जीवन में कोई समस्या है ही नहीं और जीवन जीना बहुत ही आसान है। लेकिन यदि दूसरी ओर जीवन में नित दिन हर पल समस्याओं का सामना करना पड़े और हर कदम पर हम अपने आपको परेशानी में पाएं तो यही जीवन हमें बहुत ही कठिन लगने लगेगा और ऐसा जीवन हमें क्यों मिला हम इसे कोसने लगेंगे।

कहने की बात यही है कि इस भौतिक जीवन में यदि जीवन अच्छा मिला है और सभी कुछ मनचाहा हो रहा है और कोई भी दुख या परेशानी हमें नाममात्र की भी नहीं है, तो जीने में मजा आता है और जिंदगी अच्छी लगती है और जब जीवन में अनचाहा ज्यादा होने लगे तो यही अच्छी नहीं चलती तो यही जिंदगी एक पहाड़ जैसी लगने लगती है जिंदगी से शिकायतों का सिलसिला शुरू हो जाता है, जिनका समय रहते कई बार तो हल निकल भी जाता है और कई बार कोई हल नहीं निकलता है और समस्याएं अनसुलझी ही रहती है।

मैं आपको उक्त विषय से संबंधित ही एक किस्सा बताना चाहता हूँ जो मेरे विचार में इस विषय “किस्मत अपनी-अपनी” से थोड़ा सा जुड़ा हुआ लगता है। एक शाम क्या हुआ कि कार्यालय से घर जाते हुए मैं एक दुकान पर सामान लेने के लिए रुका और उसी दौरान मैंने देखा कि एक मजदूर का बच्चा, जहाँ काम चल रहा था, वहाँ मिट्टी में खेल रहा था। मिट्टी में खेलना कोई बुरी बात नहीं है, बचपन में शायद आप और हम भी मिट्टी में खेले होंगे। उसी दौरान एक महिला का उधर से गुजरना हुआ और जो बच्चे को घुमाने वाली गाड़ी जिसे हम अंग्रेजी में (प्रेम) कहते हैं लेकर गुजर रही थी और मैंने देखा कि उस प्रेम में बच्चा नहीं था, बल्कि एक डॉगी का एक छोटा सा बच्चा बैठा हुआ था। एक पल के लिए तो मुझे बहुत ही अजीब सा लगा कि देखो किस्मत के क्या-क्या नजारे हैं? हमें क्या-क्या दिखाती है, एक ही समय में दो अलग-अलग चीजें दिखा रही है कि बच्चा जो प्रेम में होना चाहिए वह तो मिट्टी में खेल रहा है, जिसके बदन पर कपड़े भी पूरे नहीं हैं और दूसरी तरफ छोटे बच्चे वाली गाड़ी में डॉगी का छोटा सा बच्चा बैठा हुआ है, जो बिल्कुल साफ-सुथरा और नहाया हुआ दिख रहा था और नए कपड़े भी पहने था वह डॉगी का छोटा सा बच्चा। बिल्कुल एक दूसरे के विपरीत नजारे थे। प्रेम को घुमाने वाली महिला भी उस प्रेम को बहुत ही ध्यान से घुमा रही थी कि डॉगी के बच्चे को कहीं चोट भी न लगे और न ही वह कहीं

गलती से उछल कर प्रेम से बाहर न गिर जाए। जब तक वह महिला उस प्रेम सहित उस डॉंगी के बच्चे को लेकर वहाँ चली नहीं गई मेरा ध्यान उसी की ओर जाता रहा और चाहकर भी अपना ध्यान वहाँ से हटा नहीं सका। बस जो देखा, उसी के बारे में सोचता रहा और मन में तरह-तरह के ख्याल आने लगे कि ये कैसी बात? कि भगवान ने बच्चे को गरीब घर में जन्म देकर उसे बचपन में मिलने वाले सुख सुविधाओं से दूर कर दिया और डॉंगी के बच्चे को अमीर घर में पलना लिखे होने के कारण उसको उसके बचपन में सभी या अधिकतर सुख-सुविधाएं और आराम उसे सहज ही प्राप्त हो गए।

उक्त दोनो स्थितियों को देखने के बाद, मन ही मन यह अहसास होने लगा वाकई, हम सब अपनी किस्मत लिखवा कर ही आते हैं, अब लिखने वाला क्या लिखता है, यह हमें मिलने वाले जीवन के हिसाब से उस पर बहुत कुछ निर्भर करता है। यहाँ बच्चे की किस्मत ने एक गरीब घर में जन्म लिया और उसे उसी के हिसाब से जीवन में मिलता जा रहा था और दूसरी ओर उस डॉंगी के बच्चे को एक अमीर घर में पलना बढना लिखा प्रतीत हुआ। आप और हम यह सब अच्छी तरह जानते हैं कि जहां एक ओर अमीर होना कोई गुनाह नहीं है तो वहीं गरीबी और गरीब होना दोनों ही बहुत बड़े जीवन के अभिशाप माने जाते हैं। व्यक्ति गरीबी में कैसा जीवन जीता है, यह हम सब सहज जी अंदाजा लगा सकते हैं कि किसी भी गरीब अमूक व्यक्ति को जीवन जीने के लिए बहुत ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। गरीब व्यक्ति को कदम-कदम पर हर चीज के लिए संघर्ष करना पड़ता है। आज के आधुनिक जीवन में अमीरों की तरह जीने के लिए तो उसका एक सपना ही आजीवन सपना ही बना रहता है, क्योंकि अमीर और गरीब जीवन में दिन रात का अंतर होता है। एक ओर जहाँ यह माना जाता है कि अमीर व्यक्ति बहुत ही भाग्यशाली होते हैं, एक तो वे अमीर घरों में जन्म लेते हैं, रुपए पैसे की उन्हें कोई कमी नहीं होती है, उनका जीवन प्रारंभ से ही ऐशो-आराम से भरा होता है, और जीवन में किसी भी चीज को पाने के लिए (जो वो परिवार उस व्यक्ति के लिए खरीद सकता है) उसकी कोई कमी नहीं होने देता है। अमीर व्यक्ति समाज में मान-सम्मान का अधिकारी बनता है, कहने का तात्पर्य यही है कि अमीर व्यक्ति का जीवन सुख-सुविधाओं से भरा होता है तो दूसरी ओर गरीब व्यक्ति का जीवन बहुत ही परेशानियों से भरा होता है, एक तो गरीब परिवार में जन्म मिल जाता है, जीवन में शिक्षा और अच्छा जीवन जीने के लिए सभी कुछ पाने के लिए बहुत ही संघर्ष करना पड़ता है। कदम-कदम पर किसी भी चीज को खरीदने के लिए पैसे की कमी का सामना करना पड़ता है, आदि-आदि बातें गरीब व्यक्तियों के जीवन से जुड़ी होती है। गरीब व्यक्ति के लिए तो अक्सर ऐसा भी कहा जाता है कि गरीब को तो रोज ही गड्ढा खोदना होता है और पानी पीना होता है।

ये हम सबकी किस्मत ही तो होती है, जो हमें अपने हिसाब से चलाती है और हम भी उसी के अनुसार चलते रहते हैं। किस्मत का ही तो खेल होता है कि उदाहरण के लिए किसी एक घर में दो सगे भाइयों का जन्म होता है, और उन दोनो भाइयों की किस्मत भी अलग-अलग ही लिखी होती है। एक पढ़ाई-लिखाई में तेज होने के कारण पढ़-लिख कर कहीं कोई बड़ा अधिकारी बन जाता है तो दूसरा पढ़ने लिखने में तेज न होने के कारण कोई छोटा-मोटा काम धंधा ही चलाकर अपना और अपने परिवार का पेट पालता है। यहाँ देखने वाली बात यही है कि भाई भी सगे हैं, उनकी माँ भी एक ही हैं, परंतु, वो कहते हैं कि भाग्य अलग-अलग लेकर आए हैं और उसी के हिसाब से अपना-अपना जीवन जीते हैं।

जीवन का कोई भी क्षेत्र होचाहे पढ़ाई-लिखाई का क्षेत्र हो, खेलकूद का क्षेत्र हो या राजनीति या फिर कोई और क्षेत्र, सभी के लिए कहा तो यही जाता है कि व्यक्ति को अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने हेतु उसके पास एक अच्छी किस्मत का होना अत्यंत आवश्यक है। अब देखिए ना कि हर साल, यू.पी.एस.सी. की (आई.ए.एस.) संबंधी होने वाली की परीक्षा में कौन अव्वल नहीं आना चाहता है, लाखों लोग हर साल उस

परीक्षा के माध्यम से आई.ए.एस. बनने के लिए सपना देखते हैं और अपनी पूरी कोशिश करके अपना भाग्य आजमाते हैं, कि किसी भी तरह हम इस परीक्षा में या तो अव्वल आ जाए या कम से कम आई.ए.एस. के पद हेतु निर्धारित पदों पर ही नियुक्ति मिल जाए, बस चयन हो जाए लेकिन यहाँ भी आप देखेंगे कि इस परीक्षा में टॉपर वही बनता है, जिसकी किस्मत में उसका टॉपर बनना लिखा होता है और जिस-जिस पद पर लोगों का चयन होता रहता है, तो यह समझ लो कि उन-उन व्यक्तियों का उन पदों पर चयनित होना लिखा होता है।

लेकिन एक तरह से यह उन व्यक्तियों के मामले में जो अनेक बार भी परीक्षा देकर उत्तीर्ण नहीं हो पाते या उनके मामले में जब तक अंतिम चयन नहीं कहा जा सकता है जो लोग अपने उस चयन से संतुष्ट नहीं होते कि जब तक उनको आई.ए.एस. या उनके मनचाहा पद प्राप्त न हो जाए। मनचाहे पद पाने तक वे लोग असंतुष्टि के दौर से गुजरते हैं। ऐसा होना एक लाजमी सी बात भी होती है क्योंकि आई.ए.एस. का पद इस परीक्षा के द्वारा भारतीय सिविल सेवाओं के मद्देनजर भरा जाने वाला सबसे बड़ा पद और अपने आप में एक बहुत गरिमामयी पद भी होता है।

इसी तरह किसी खेलकूद की बात करें जैसे ऑलंपिक की ही बात करें तो कौन सा खिलाड़ी नहीं होगा जो हर चार साल में आयोजित होने वाले विश्व के सबसे बड़े खेल के महाकुंभ में स्वर्ण पदक प्राप्त नहीं करना चाहेगा। सभी खेलों के खिलाड़ी अपने क्षेत्र से संबंधित खेल हेतु अपनी पूरी जान लगा देते हैं कि कैसे भी करके प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त कर ही लें, लेकिन होता क्या है कि केवल वे ही स्वर्ण पदक प्राप्त करते हैं जिनका उन स्वर्ण पदकों पर नाम लिखा होता है और अगर नहीं जीत पाते हैं, तो फिर वही अगले ऑलंपिक तक का इंतजार करना पड़ता है। ऐसे में यह भी तय नहीं होता है कि वे अगली बार स्वर्ण पदक तो दूर, खेलने हेतु फिट भी रहेंगे या नहीं, क्वालीफाई भी कर पाएंगे या नहीं। सभी कुछ अनिश्चितताओं के भंवर में चला जाता है।

इसी प्रकार राजनीति की बातें भी मिल ही जाएंगी, जैसे कि कोई महामंत्री या मंत्री का ही बेटा क्यों न हो और वह भी यह सोचकर चल रहा होता है कि राजनीति में मुझे अपना भाग्य आजमाने में कोई परेशानी नहीं आएगी, क्योंकि एक तो मैं मंत्री जी का बेटा हूँ और पहले से ही राजनीति के क्षेत्र में हूँ और हजारों लोग मुझे जानते हैं, लिहाजा मुझे चुनाव का टिकट मिलने और चुनाव जीतने में कहीं कोई परेशानी नहीं आएगी और मैं भी अपने पिता की तरह ही आराम से किसी अमूक सरकार में मंत्री या कोई अन्य महत्वपूर्ण पद प्राप्त कर ही लूंगा। ऐसा सोचना उस व्यक्ति का गलत नहीं है, क्योंकि उक्त क्षेत्र से जुड़े होने के कारण आसार तो उसके मन में स्वाभाविक रूप से बनने ही लगते हैं। लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी भाग्य तो अपना रोल अदा करता ही है। व्यक्ति को पता ही नहीं होता है कि उसका भाग्य उसके लिए क्या सोच रहा होता है। उदाहरण के लिए कई बार व्यक्ति “(ए)” प्राप्ति के जतन करता है और उसे (ए) की प्राप्ति न होकर “(बी)” की प्राप्ति होती है। इसलिए, हमारे भाग्य में क्या छिपा है या भविष्य या हमारा आने वाला कल हमारे लिए क्या लेकर बैठा है, यह किसी को ज्ञात नहीं होता है। बस, सब कुछ समय को ही मालूम होता है कि अगले ही पल भविष्य में क्या होने वाला होता है। ऐसे अब भी बहुत से व्यक्ति होंगे जिनके लिए इतना सब कुछ होते हुए भी मंत्री पद प्राप्त करना तो दूर की बात होती है बल्कि उल्टा कई बार तो उन्हें चुनाव लड़ने हेतु टिकट भी नहीं मिल पाती है और यदि चुनाव लड़ भी लेते हैं तो हार जाते हैं, जिसकी वजह से मंत्री और बड़े पद पाने का सपना, सपना ही रह जाता है।

सार: उक्त विषय के विषय में कहे तो यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी किस्मत अलग अलग लिखवाकर आता है। कोई भाग्य का धनी होने के कारण चमक जाता है और तो कोई भाग्य का कम साथ मिलने के कारण व्यक्ति उतना नहीं चमक पाता है जितने और व्यक्ति अपने सफल भाग्य के साथ जी रहे होते हैं, या उसे पाकर वे बहुत ही खुशनसीब हो जाते हैं। अच्छा भाग्य मिलने पर यह मान लिया

जाता है कि व्यक्ति को जीवन में कहीं कोई किसी भी वस्तु को पाने में परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा, जबकि दूसरी ओर गरीब व्यक्ति या कम भाग्य वाले को कई बार वह चीजें नहीं मिल पाती हैं, जिन्हें वह पाना चाहता है। भाग्यवान व्यक्ति के विषय में तो यहाँ तक कहा जाता है कि वह तो “जन्म से मुँह में चांदी की चम्मच लिए हुए पैदा हुआ है” अर्थात् Born with silver spoon” उसको क्यों कोई परेशानी आएगी और दूसरी ओर गरीब के लिए हर चीज पाने के लिए जीवन संघर्ष भरा प्रतीत होता है। इसलिए, कह सकते हैं कि व्यक्ति के माँ के गर्भ में आने से लेकर और इस संसार से जाने तक सभी कुछ भाग्य पर ही निर्भर करता है, वह उसी के अनुसार अपना जीवन जीता है या यूँ भी कह सकते हैं कि व्यक्ति के भाग्य में लिखे कर्म ही अनुसार ही प्रभु उसका जीवन निर्धारित कर देते हैं। इसलिए, हर किसी की यही इच्छा होती है कि जीवन मिले तो राजा के घर में ही मिले और जीवन सभी सुख सुविधाओं से पूर्ण हो और जीवन में किसी भी बात के लिए पूर्ण करने के लिए कोई संघर्ष न लिखा हो सभी कुछ सहजता से ही प्राप्त हो जाए और संपूर्ण जीवन सरलता से भी बीत जाए। लेकिन कई बार ऐसा भी देखने में आता है कि व्यक्ति के पास सब कुछ मनचाहा और अच्छा अच्छा होते हुए भी वह उससे जुड़े सुख या कोई सुविधा भोग नहीं पाता है, जबकि दूसरी ओर एक गरीब व्यक्ति गरीब होते हुए भी अपना जीवन एक राजा की तरह गुजारता है, जो मनचाहा होता है, उसे प्राप्त कर लेता है और पूरा जीवन खुशी-खुशी गुजारता है, इन सबके पीछे भी लिखे हुए भाग्य का ही खेल होता है कि व्यक्ति अमीर होते हुए भी जीवन सुख से नहीं भोगता है और गरीब होते हुए भी खुशी-खुशी अपना सारा जीवन अच्छे से और मजे से गुजार देता है। दोनों के जीवन में लिखे हुए भाग्य के अनुसार दिन-रात का अंतर हो जाता है और किस्मत या भाग्य अपना रंग फिर से सिद्ध कर देता है कि वह कितना शक्तिशाली है, वह जो चाहेगा व्यक्ति का जीवन उसी के अनुसार चलेगा। यहाँ हम व्यक्ति के भाग्य को एक और रूप में भी जान सकते हैं कि व्यक्ति का भाग्य या किस्मत मतलब अर्थात् प्रभु की इच्छा। इस विषय में यह भी कहा जाता है कि प्रभु व्यक्ति का जीवन या भाग्य उसके पूर्व के कर्मों के अनुसार ही लिखते हैं और सभी लोग इस बात में विश्वास भी रखते हैं कि हमें अच्छे ही कर्म ही करने चाहिए हमारा अगला जन्म अच्छा होने की पूरी पूरी संभावना बनी रहेगी और सिद्धांतः हमें अपना आज और आने वाला कल और जन्म सुधारने या यूँ कहें कि बहुत ही अच्छा अच्छा मिले तो हमें हमेशा इसके लिए सदकर्म ही करने चाहिए ताकि उसका फल हमें कुछ तो इस जन्म में और कुछ अगले जन्म में प्राप्त हो जाए। इसीलिए तो कहा गया है कि किस्मत अपनी-अपनी, जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर अपना पूरा-पूरा प्रभाव डालती है और व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार चलाती है। पृथ्वी पर जो जन्म लेने वाले हैं उनकी भी किस्मत प्रभु अच्छी ही लिखे और जो जन्म ले चुके हो उन सबकी भी किस्मत प्रभु ने अच्छी ही लिखी हो, इन्हीं शब्दों के साथ ही मैं अपनी कलम को विराम देता हूँ।



मनोवैज्ञानिक प्रबंधन



श्री सुखदेव गोयल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मानव सभ्यता के विकास के साथ ही मानव ने विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग तरह के प्रयोगों एवं अनुप्रयोगों से विभिन्न विषयों के ज्ञान को प्रामाणिक और निष्कर्ष के तौर पर बद्ध किया। विभिन्न विषयों एवं क्षेत्रों के ज्ञान को लेखनी से लेखबद्ध करने के क्रम में सतत वृद्धि होती गयी तथा नित नये विषय एवं तथ्य उजागर होते गए।

मनोविज्ञान एक विषय विशेष न होकर एक संयुक्त विषय है। इसके विकास का क्रम भी सतत जारी है तथा वर्तमान में उपलब्ध जानकारी के आधार पर यह कहना उचित ही होगा की जिस तरह पृथ्वी अपनी शैशवावस्था में है उसी तरह मनोविज्ञान भी शैशवावस्था में है अर्थात् इस क्षेत्र में अभी तक उपलब्ध तथ्य तथा ज्ञान सीमित है। इस संयुक्त विषय की परिभाषाएँ भी कालानुक्रम के साथ बदलती गयी इसे आत्मा का विज्ञान, मन का विज्ञान, मस्तिष्क का विज्ञान, व्यवहार का विज्ञान आदि के रूप में परिभाषित किया गया लेकिन इसकी ये सभी परिभाषाएँ इसके संकीर्ण अर्थ को प्रकट करती है। मनोविज्ञान का व्यापक अर्थ अभी तक इन संकीर्ण अर्थों के कारण तथा इसे एक विषय मात्र समझने से प्रकट नहीं हुआ है।

मशीनों एवं तकनीकी की इस २१ वीं सदी में भी इस संयुक्त विषय का अनुप्रयोग मानव जीवन के हर क्षेत्र को सरल बनाने के लिए प्रासंगिक है। वर्तमान में इसका अनुप्रयोग हर एक क्षेत्रों में प्रभावी रूप से परियोजनाओं को क्रियान्वित करने में हो रहा है। निम्न क्षेत्रों में इसका अनुप्रयोग वर्तमान में सबसे ज्यादा प्रचलन में है :- संगठनात्मक मनोविज्ञान, नैदानिक मनोविज्ञान, सामाजिक मनोविज्ञान, शिक्षा मनोविज्ञान, सामाजिक मनोविज्ञान, पशु मनोविज्ञान। इन सभी क्षेत्रों में इस मनोविज्ञान के तथ्यों आदि का उचित तरीके से अनुप्रयोग ही मनोवैज्ञानिक प्रबंधन की श्रेणी में आता है।

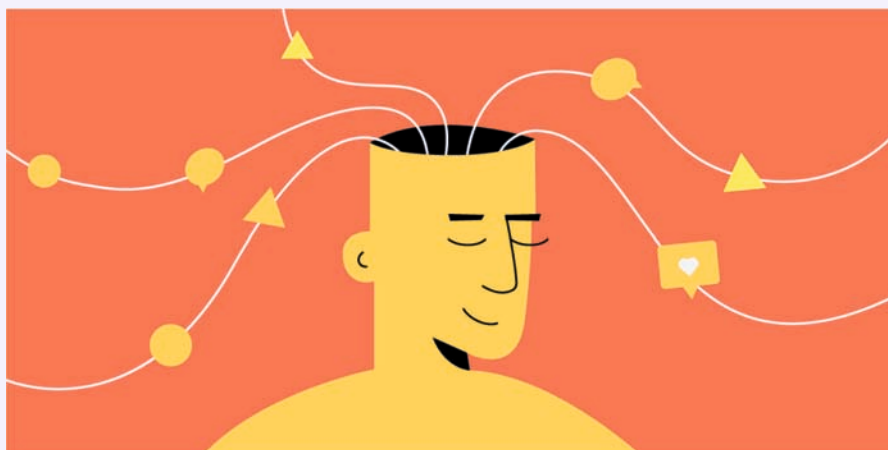
वर्तमान में भारत जैसे विकासशील देश जिसमें इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास द्रुत गति से हो रहा है तथा सभी योजनाओं, परियोजनाओं और कार्यों को क्रियान्वित करने हेतु संगठनात्मक मनोविज्ञान (ORGANISATIONAL PSYCHOLOGY) का अनुप्रयोग सबसे ज्यादा आवश्यक है। संगठनात्मक मनोविज्ञान का अनुप्रयोग किसी भी संस्थान, संगठन, कार्यालय, विभाग, समूह आदि में उपलब्ध संसाधनों के उचित उपयोग करते हुए वांछित लक्ष्यों को तय समय सीमा में प्राप्त करना है। किसी भी संगठन में अधिकारी स्तर से लेकर अंतिम स्तर के कार्मिक की योग्यता, गुणवत्ता तथा प्रतिभा का अधिकतम प्रयोग उचित मनोवैज्ञानिक प्रबंधन करते हुए ही लिया जा सकता है। किसी भी संगठन के प्रशासक या अधिनायक के लिए यह आवश्यक हो जाता है की संगठन के हर एक कार्यकर्ता/कार्मिक के संदर्भ में सम्पूर्ण ब्यौरा उनके पास उपलब्ध होना चाहिए जिससे उन कार्यकर्ताओं/कार्मिकों की प्रतिभा का अधिकतम प्रयोग हो सकें। एक अच्छे अधिनायक/मुखिया/लीडर में यह गुण होना आवश्यक है की संगठन के लक्ष्यों एवं कार्यों की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए सभी कार्यकर्ताओं/कार्मिकों को उनकी प्रतिभा के आधार पर कार्य सौंपा जाए।

संगठनात्मक मनोविज्ञान के प्रबंधन के अंतर्गत किसी भी संगठन के वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु सिर्फ कार्मिकों की प्रतिभा पहचानना ही पर्याप्त नहीं है जबकि नियत समयांतरालों पर उन्हें प्रेरणा एवं पुरस्कार की भी आवश्यकता होती है। संगठनात्मक मनोविज्ञान के प्रबंधन के अंतर्गत किसी भी संगठन के प्रशासक/मुखिया/प्रबन्धक को अपने व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से बचते हुए सभी को राजा-प्रजा की तरह एक समान दृष्टि से देखना चाहिए।

यह कहना उचित ही होगा की यदि मनोविज्ञान की किसी भी शाखा का अनुप्रयोग मनोवैज्ञानिक प्रबन्धन से किया जाए तो आशातीत बदलाव देखने को मिल सकते हैं। मानव जीवन में सबसे महत्वपूर्ण यही होता है की किसी भी कार्य को किस नये तरीके से उपलब्ध संसाधनों के प्रयोग से क्रियान्वित किया जाए, इस कार्य में मनोवैज्ञानिक प्रबंधन अति महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

मनोविज्ञान की किसी भी शाखा के अनुप्रयोग करते समय आने वाली समस्याओं, विकृतियों तथा बाधाओं की वृत्ति का मनोवैज्ञानिक अध्ययन नैदानिक मनोविज्ञान में किया जाता है। इसके अंतर्गत समस्याओं के समाधान के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों तथा प्रविधियों का समग्र रूप से प्रयोग किया जाता है। इस शाखा का शाब्दिक अर्थ सिर्फ उपचारात्मक मनोविज्ञान है जबकि इसका अनुप्रयोग किसी भी क्षेत्र की समस्या का आंकलन करके मनोवैज्ञानिक तरीके से हल निकलने हेतु किया जाता है। इस शाखा के मनोवैज्ञानिक प्रबंधन से समस्याओं को आंकलन करने तथा उनके हल पर ध्यान केन्द्रित करने में आसानी होती है।

इस तरह कहा जा सकता है की मनोविज्ञान सिर्फ एक विषय विशेष न होकर एक संयुक्त विषय है तथा इसके प्रामाणिक ज्ञान और तथ्यों का उचित अनुप्रयोग ही मनोवैज्ञानिक प्रबंधन की श्रेणी में आता है। इसके अनुप्रयोग से मानव जीवन को सरल बनाते हुए किसी भी क्षेत्र की कठिनाइयों को हल करने में आसानी होती है।



आवश्यकता एवं आविष्कार



श्री सोमदत्त यादव
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

जिस दुनिया में हम रहते हैं वह वास्तव में बहुत अनोखी है, यह मानवता को वह देती है जो वह चाहती है। यह इंसानों की जरूरत पर काम करता है कि वे क्या चाहते हैं। लेकिन क्या ये सब अपने आप होता है? नहीं, प्रत्येक व्यक्ति एक महान मिशन को पूरा करने के लिए पैदा हुआ है लेकिन हम इसे कभी नहीं जान पाते हैं। आज तक हुए सभी महान आविष्कार कोई चमत्कार नहीं बल्कि लोगों की जरूरत और निर्माता की कड़ी मेहनत और नवीनता है। सभी महान वैज्ञानिकों और अन्वेषकों ने हमेशा हमारे जीवन में अपने आविष्कारों की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया है। कुछ नया आविष्कार करने का यह सबसे महत्वपूर्ण कारक है, क्योंकि यदि कोई चीज़ हमारे लिए उपयोगी नहीं है, तो उस रचना को अधिकतर 'अनावश्यक' कहा जाता है। जब प्रकृति ने स्वयं ऐसी चीज़ें विकसित की हैं जो हमारी कुछ मूलभूत आवश्यकताएं हैं तो, हम इंसान भी उन चीज़ों या विचारों का निर्माण और आविष्कार कर रहे हैं जो हमारी वर्तमान या भविष्य की जरूरत है।

आवश्यकता किसी भी खोज का मूल है, इस बात को सिद्ध करते हुए हमें कई उदाहरण मिल सकते हैं, जैसे, थॉमस एडिसन द्वारा आविष्कार किया गया इलेक्ट्रिक बल्ब 1800 के दशक की मानव आवश्यकता थी। एडिसन को पता था कि अधिकांश घरों में बिजली की कोई सुरक्षित स्रोत नहीं है, इसलिए उन्हें जल्द ही समझ में आ गया कि उन्हें कुछ ऐसा बनाना होगा जो आग से अधिक सुरक्षित और अन्य स्रोतों की तुलना में सस्ता हो। इस प्रकार विद्युत बल्ब का निर्माण हुआ जिसके बिना हम सूर्यास्त के बाद अपने दैनिक जीवन के बारे में सोच भी नहीं सकते थे।

ऐसा सिर्फ एक ही उदाहरण नहीं है बल्कि ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं और कई हमारे लिए अज्ञात हैं लेकिन फिर भी वही संदेश देते हैं। जैसे मोटोरोला कंपनी के संस्थापक मार्टिन कूपर ने 70 के दशक में दुनिया का पहला मोबाइल फोन बनाया था। यहां तक कि अलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने भी संचार का एक साधन टेलीफोन बनाया, लेकिन यह पोर्टेबल और सुविधाजनक नहीं था। इसलिए, हमें न केवल आवश्यक आविष्कार करने चाहिए बल्कि बेहतर और उन्नत भी बनाने चाहिए।

इन सभी उदाहरणों की तरह ही आज का मानव नवीन आविष्कार एवं नयी खोज लगातार कर रहा है। आज के परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर ही नए प्रयोग करते हुये कृत्रिम मेधा (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) जैसी मानवकृत बुद्धि नए आयाम गढ़ रही है। कृत्रिम मेधा की शुरुआत 1950 के दशक में हुई थी। इसका अर्थ है बनावटी (कृत्रिम) तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता। इसके जरिए कम्प्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है, जिसे उन्हीं तर्कों के आधार पर चलाने का प्रयास किया जाता है जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क काम करता है। कृत्रिम मेधा कम्प्यूटर द्वारा नियंत्रित रोबोट या फिर मनुष्य की तरह सोचने वाला सॉफ्टवेयर बनाने के एक तरीका है। यह इसके बारे में अध्ययन करता है कि मानव मस्तिष्क कैसे सोचता है और समस्या को हल करते समय कैसे सीखता है, कैसे निर्णय लेता है और कैसे काम करता है। इसी के चलते कई क्षेत्रों में इसका बढ़-चढ़कर उपयोग होने लगा है। इसका प्रयोग मानव विकास में नए कीर्तिमान खड़े कर रहा है।

कृत्रिम मेधा ने मनुष्य के लिए न केवल किसी काम को आसान बनाया है बल्कि इसे और अधिक सटीक एवं सार्थक बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कृत्रिम मेधा का अनुप्रयोग आजकल हर क्षेत्र में किया जाने लगा है। इन क्षेत्रों में शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, कला, वाणिज्य, व्यापार, रक्षा, ऊर्जा, परिवहन, कृषि आदि कई महत्वपूर्ण क्षेत्र शामिल हैं। इनमें हर एक क्षेत्र में इसकी उपादेयता अत्यंत कारगर सिद्ध हुई है। कृत्रिम मेधा के माध्यम से चिकित्सा क्षेत्र में बहुत अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसके तहत जटिल ऑपरेशन करने में मानव की तुलना में मशीन कहीं अधिक क्षमता पूर्ण सिद्ध हो सकती है। खासकर रक्षा क्षेत्र में इसकी भूमिका आने वाले समय में बहुत अधिक महत्वपूर्ण होने वाली है। इसके अलावा खनन और अन्वेषण के क्षेत्र में भी कृत्रिम मेधा का उपयोग किया जा सकता है।

हालांकि इसके अपने अलग नुकसान और खतरे हो सकते हैं जिनमें मनुष्य की जगह इनका इस्तेमाल बेरोजगारी जैसी चुनौती के रूप में सामने आ सकता है। किन्तु एक निर्धारित सीमा तक इसका उचित प्रयोग मानव विकास में अपनी महती भूमिका निभा सकता है। आज के विश्व की चुनौतियों को देखते हुये कृत्रिम मेधा का योगदान अतुलनीय हो सकता है।

तो, निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि किसी भी महान, प्रभावी और प्रगतिशील आविष्कार को करने के लिए आवश्यकता सबसे बड़ा हथियार है। आविष्कार और आवश्यकता सह-संबंधित हैं और लोगों को कार्रवाई करने के लिए प्रेरित करती हैं। आवश्यकता लोगों को अस्तित्व के साधनों का आविष्कार करने के लिए मजबूर करती है। एक महान आविष्कार करने के लिए सबसे अच्छा उपाय उसकी (आवश्यकता) आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित करना है, जैसे, आजकल और भविष्य में भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हमारी वर्तमान आवश्यकता है और हमेशा रहेगी, इसलिए हमें हमेशा आगे बढ़ते रहना होगा और विकास करना होगा!

"यदि आवश्यकता आविष्कार की जननी है, तो तात्कालिकता परिवर्तन की जननी है, इसके बिना, प्रगति धीमी हो जाती है और फिर रुक जाती है और उलट जाती है"।



मानव मूल्य



सुश्री निरमा कुमारी गुप्ता
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि मानवता सबसे बड़ा धर्म है। सम्पूर्ण प्राणी जगत के प्रति दया, सेवा, कल्याण और परोपकार की भावना ही मानव मूल्यों के परिचायक हैं। पर आज मानव में स्वार्थ की भावना इस कदर घर कर गई कि मानव सर्वप्रथम अपने ही बारे में सोचता रहता है। वक्त के साथ मानव की संवेदनाएं और भावनाएं भी बदलती जा रही हैं। मानव अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए मानव मूल्यों को नजरंदाज करते जा रहा है। हम मानवों में स्वार्थ की भावना इतनी हावी हो रही है कि मानव मूल्यों का हास होते जा रहा है। मानव मूल्यों के विघटन से बेजुबान पशु एवं पक्षी सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। हम मानव के स्वार्थपूर्ण विकासशील नीति के कारण पशु-पक्षी की कई प्रजातियाँ विलुप्त होते जा रही हैं। आज यह दौर है जब कोई प्राणी चाहे वह मनुष्य हो या मुखबधिर जीव किसी दुर्घटना से ग्रसित हो जीवन-मृत्यु के बीच जूझ रहा होता है तब हम उनके प्रति दया भाव रखते हुए मदद करने के बजाय अपने हित की चिंता कर बड़ी आसानी से खुद को किनारे कर लेते हैं। हम अपने आप को ऊपर उठाने में इतने व्यस्त हो चुके हैं कि रास्ते में तड़पते जीव भी हमारी आँखों से ओझल हो जाते हैं। बेजुबान जीवों की रक्षा हम मनुष्यों का परम धर्म है पर हम उनके रक्षक नहीं भक्षक बने हुए हैं। बड़े-बड़े शहरों में हो रही दुर्घटनाएं और उस दुर्घटना स्थल में मौजूद लोगों की शून्य प्रतिक्रिया मानव मूल्यों के हास का सूचक है।

पर कहते हैं न कि एक सिक्के के दो पहलू होते हैं, वैसे ही इस सन्दर्भ में एक पहलू ये भी है जो मानव मूल्यों को जिन्दा रखते हैं। रफ़्तार भरी इस दुनिया में कुछ महान शख्सियत ऐसे भी हैं जो मानव मूल्यों की कसौटी पर खड़े उतरते हैं। वे दूसरों की मदद के लिए इतने तत्पर रहते हैं कि वो अपने घाटे-नुकसान के बारे में नहीं सोचते। दुर्घटनाग्रस्त जीवों की बेझिझक मदद कर हमारे सामने मानवता का उदाहरण प्रस्तुत कर देते हैं, ऐसा ही एक उदाहरण है - एक गली में एक कुत्ते का पिल्ले को एक वाहन बड़ी बेरहमी से कुचल कर चला गया वह कुत्ते का पिल्ला खून से लथपथ रास्ते पर पड़ा रहा पर किसी की हिम्मत नहीं हुई कि उस कुत्ते के पिल्ले के लिए कुछ करे तभी एक लड़की दौड़ी आई और बिना आगा पीछा किए खून से लथपथ उस कुत्ते के पिल्ले को अपनी गोद में उठा लिया और उसके उपचार के लिए दौड़ पड़ी और हम सबके सामने मानवता की परिभाषा देते चली गयी। कई बार ऐसा होता है कि हम चाह कर भी किसी असहाय की मदद नहीं कर पाते क्योंकि हम हिम्मत नहीं जुटा पाते। इसलिए मानव मूल्यों की उत्थान के लिए हम में हिम्मत भी भरपूर होनी चाहिए ना कि केवल विचार। चाहे मनुष्य हो या मुखबधिर जीव जो सभी के प्रति दया व करुणा का भाव रखते हैं वही मानवता के सबसे बड़े उदाहरण हैं।

मैं अपने शब्दों को अंतिम रूप देते हुए यह कहना चाहूंगी कि हम मनुष्य अच्छे काम करने के लिए हजार बार सोचते हैं और गलत काम करने के लिए एक बार भी नहीं सोचते एवं कई बार अपने स्वार्थ के लिए गलत काम को भी सही मान लेते हैं इससे मानव मूल्यों का हास होता है। अतः मानवता को ऊपर उठाने के लिए मानव मूल्यों का उत्थान आवश्यक है।



श्री वैभव मितल
सहायक लेखा अधिकारी

कल एक झलक जिंदगी को देखा वो राहों पे मेरी गुनगुना रही थी,
फिर ढूँढा इसे इधर-उधर वो आंख मिचौली कर मुस्कुरा रही थी।
एक अरसे के बाद आया मुझे करार, वो सहला के मुझे सुला रही थी,
हम दोनों क्यूँ खफा हैं एक दूसरे से, मैं उसे और वो मुझे समझा रही थी।
मैंने पूछ लिया- क्यों इतना दर्द दिया कमबख्त तूने
वो हँसी और बोली- मैं जिंदगी हूँ पगले तुझे जीना सीखा रही थी।
तू जिंदगी को जी उसे समझने की कोशिश न कर,
सुन्दर सपनों के ताने-बाने बुन उसमें उलझने की कोशिश न कर।
चलते वक्त के साथ तू भी चल उसमें सिमटने की कोशिश न कर
अपने हाथों को फैला, खुल कर साँस ले अंदर ही अंदर घुटने की कोशिश न कर।
मन में चल रहे युद्ध को विराम दे खामखा खुद से लड़ने की कोशिश न कर।
जो मिल गया उसी में खुश रह, जो सुकून छीन ले वो पाने की कोशिश न कर।
मंजिल मिले ना मिले, ये तो मुकदर की बात है, हम कोशिश भी ना करे ये तो गलत बात है।
जिन्दगी जख्मों से भरी है, वक्त को मरहम बनाना सीख लो, हारना तो है एक दिन मौत से,
फिलहाल जिन्दगी जीना सीख लो।



“हिंद और हिंदी”



सुश्री रिंकी गुप्ता
सहायक लेखा अधिकारी

हिंदी है हिंद की शान,
हिंद को है हिंदी पर अभिमान ।
हिंदी करती हिंद का गुणगान,
हिंद करता हिंदी का सम्मान ।

सब भाषाएँ अपने-अपने घर की रानी,
हिंद-भारती हिंदी पुरे हिंद की पटरानी ।
सरहद मिटाये दिल मिलाये, बने जन-जन की जुबान,
घर-घर महकती हिंदी बने हिंद की पहचान ।

हिंदीहिंद के माथे की बिंदी,
व्यवहार की भाषा चाहे राजस्थानी हो या सिन्धी ।
हिंद को एक सूत्र में पिरोती है,
जनमानस के भाव को व्यक्त कराती है ।

हो हिंदी में अध्ययन-अध्यापन, चहुँ ओर फैले उजियारा ,
दुनिया को राह दिखाये, बने सिरमौर हिंद हमारा ।
नदी की जैसी बहती रहे, करे हिंद का जागरण,
कंठ-कंठ को प्यारी हो, बने हिंद का आचरण ।



ऐसा एक अंतरिक्ष बनाए



श्री अभिषेक पंड्या
व. लेखाकार

खुद के बुने अनंत अंधियारों में
कुछ खुशियों के तारे जगमगाए,
अंधेरों में भी रास्ता दिखाएं
एक ऐसा चांद बनाए,
एक ही कक्ष पर हो वो सूरज
जो कभी ना डूबने पाए,
समय से परे शून्य में भी
अनवरत बढ़ते जाए,
समस्याओं से बनी उल्काओं को टूटते देख
अपनी अभिलाषा जताए,
लटकते रहे नेतिकताओं के गुरुत्वाकर्षण में

ऐसा एक ग्रह बनाए,
अज्ञानता के कृष्ण विवर को भेद
ज्ञान की आकाशगंगा बनाए,
बढ़ते रहे संभावनाओं के उड़न खटोले में
ऐसा एक ब्रह्मांड बनाए,
सहजी रहे मानवता अनंत काल तक
ऐसी एक पृथ्वी बनाए,
आओ ऐसा एक अंतरिक्ष बनाए ।



दोस्ती



सुश्री प्रिंसिल्ला पेंटो
लेखाकार

क्या पता क्या है ये दोस्ती?
जो रोशनी बनकर अंधेरा दूर कर जाती है।
अजीब है ये रिश्ते जो किस्मत से मिलते हैं,
किसी विशिष्ट पर एतबार हो जाता है।
अंजाना कोई शख्स यार बन जाता है,
बेरंग जिंदगी में मस्ती वाला साथी बन जाता है।
योग्यता से नहीं बनती प्रीत है,
चुप्पी से भी प्यार हो जाता है।
दोस्ती खूबसूरत ख्वाबसा लगता है,
पर असल में कभी न खत्म होने वाला आनंद है।
हार-जीत में साथ-साथ होते हैं,
कभी रूठते तो कभी मनाते रहते हैं।
दोस्ती एक कभी न रुकने वाला संगीत है,
जो जीवन मधुमय बना देता है।
जिसके आने से होंठों पर मुस्कराहट आ जाती है,
प्रेम और त्याग से जुड़ी एक कड़ी बन जाती है।
दोस्ती ऐसी जो कभी न थके,
दिल से पुकारो और ढाल बन जाती है।
जिसके पास शिकायतों का भंडार है,
फिर भी दुनिया में सबसे खास है ये दोस्ती।

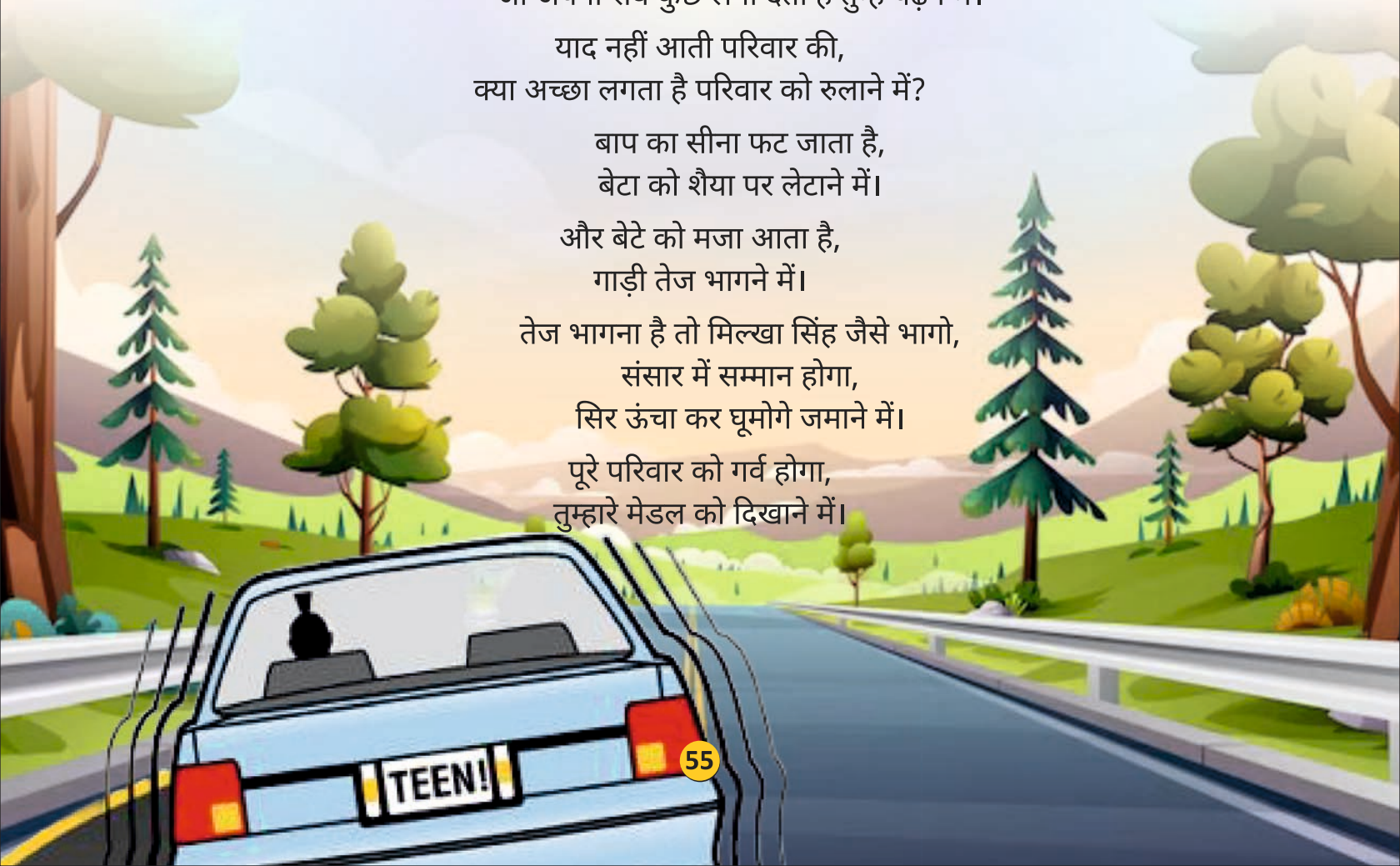


लापरवाही



श्री मुक्ता कुमार
लेखाकार

वर्षों लग जाते हैं,
बेटा को बड़ा बनाने में।
बेटा घर छोड़ जाता है,
गाड़ी तेज भागने में।
याद नहीं आती माँ की,
क्या अच्छा लगता है माँ को रलाने में?
राह देखती है वो बहन,
जिसके साथ तुमने बचपन बिताया था।
राह देखती है वो माँ,
जिसने तुम्हें चलना सिखाया था।
राह देखता है वो बाप,
जो अपना सब कुछ लगा देता है तुम्हें पढ़ने में।
याद नहीं आती परिवार की,
क्या अच्छा लगता है परिवार को रलाने में?
बाप का सीना फट जाता है,
बेटा को शैया पर लेटाने में।
और बेटे को मजा आता है,
गाड़ी तेज भागने में।
तेज भागना है तो मिलखा सिंह जैसे भागो,
संसार में सम्मान होगा,
सिर ऊंचा कर घूमोगे जमाने में।
पूरे परिवार को गर्व होगा,
तुम्हारे मेडल को दिखाने में।



हौंसला



श्री दीपक परमार
एम. टी. एस.

तिनका-तिनका जमाकर पंछी का बनाना घोंसला,
खुले आसमान में बच्चों का पहली बार उड़ने का हौंसला।
कड़ी धूप में समुद्र के खारे पानी का भाप बनकर उड़ जाता हूँ,
बारिश बनकर मीठे पानी के साथ में जीवन लाता हूँ।
आखिर में धरती से मिल जाता हूँ।
सैंकड़ों दूर से आती हूँ, पहाड़ों को चीरकर जाती हूँ,
कभी झरना तो कभी नदी बन जाती हूँ।
आखिर में सागर से मिल जाती हूँ।
कीचड़ में रहकर भी 'कमल' का श्रेष्ठ फूल बन जाता हूँ,
काँटों के बीच रहकर भी 'गुलाब' बन जाता हूँ।
वैसे तो बांस का एक टुकड़ा हूँ, मगर
छेद होने के बाद 'बाँसुरी' बन जाता हूँ।
रहता हूँ कोयले की खदानों में, फिर भी
कोयला नहीं 'हीरा' बन जाता हूँ।
वैसे तो 'सोने' के आगे मेरा कोई मोल नहीं है,
लोहे का सिर्फ एक टुकड़ा हूँ।
फिर भी 'ताला' बन कर सोने की हिफाज़त करता हूँ।
और अनमोल बन जाता हूँ।





माननीय सी ए जी





हिन्दी पखवाड़ा

